

नमो नमो निम्मलदंसणस्स
पूज्य आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरुभ्यो नमः

On Line – आगममंजूषा

[३३] मरणसमाहि

* संकलन एवं प्रस्तुतकर्ता *

मुनि दीपरत्नसागर [M.Com., M.Ed., Ph.D.]

॥ किंचित् प्रास्ताविकम् ॥

ये आगम-मंजूषा का संपादन आजसे ७० वर्ष पूर्व अर्थात् वीर संवत् २४६८, विक्रम संवत्-१९९८, ई.स.1942 के दौरान हुआ था, जिनका संपादन पूज्य आगमोद्धारक आचार्यश्री [आनंदसागरसूरिजी](#) म.सा.ने किया था। आज तक उन्हीं के प्रस्थापित-मार्ग की रोशनी में सब अपनी-अपनी दिशाएँ ढूँढते आगे बढ़ रहे हैं।

हम ७० साल के बाद आज ई.स.-2012, विक्रम संवत्-२०६८, वीर संवत्-२५३८ में वो ही आगम-मंजूषा को कुछ उपयोगी परिवर्तनों के साथ इंटरनेट के माध्यम से सर्वथा सर्वप्रथम “**OnLine-आगममंजूषा**” नाम से प्रस्तुत कर रहे हैं।

*** मूल आगम-मंजूषा के संपादन की किंचित् भिन्नता का स्वीकार ***

- [१] आवश्यक सूत्र-(आगम-४०) में केवल मूल सूत्र नहीं है, मूल सूत्रों के साथ निर्युक्ति भी सामिल की गई है।
[२] जीतकल्प सूत्र-(आगम-३८) में भी केवल मूल सूत्र नहीं है, मूलसूत्रों के साथ भाष्य भी सामिल किया है।
[३] जीतकल्प सूत्र-(आगम-३८) का वैकल्पिक सूत्र जो “पंचकल्प” है, उनके भाष्य को यहाँ सामिल किया गया है।

[४] “ओघनिर्युक्ति”-(आगम-४१) के वैकल्पिक आगम “पिंडनिर्युक्ति” को यहाँ समाविष्ट तो किया है, लेकिन उनका मुद्रण-स्थान बदल गया है।

[५] “कल्प(बारसा)सूत्र” को भी मूल आगममंजूषा में सामिल किया गया है।

-मुनि दीपरत्नसागर

: Address:-

Mnui Deepratnasagar,
MangalDeep society, Opp.DholeswarMandir,
POST:- THANGADH Dist.surendranagar.
Mobile:-9825967397 jainmunideepratnasagar@gmail.com

मुनि दीपरत्नसागर



रिसेसो ॥ ३०७ ॥ २०-१२३५ ॥ देविंदत्थयपइण्णं समत्तं ९ ॥ **अ॥ ३१-३३ →** अथ श्रीमरणसमाधिप्रकीर्णकम्-तिहुयणसरीरिवंदं सप्प (प्र०संघ) वयणरयणमंगलं नमिउं । समणस्स उत्तमद्वे मरणविहीसंगहं वुच्छं ॥ १ ॥ १२३६ ॥ सुणह सुयसारनिहसं ससमयपरसमयवायनिम्मायं । सीसो समणगुणइदं परिपुच्छइ वायगं कंची ॥ २ ॥ अभिजाइसत्तविक्रमसुयसीलविमुत्तिखं- तिगुणकलियं । आयारविणयमद्ववविजाचरणागरमुदारं ॥ ३ ॥ कित्तीगुणगब्भहरं जसखाणिं तवनिहिं सुयसमिद्धं । सीलगुणनाणदंसणचरित्तरयणागरं धीरं ॥ ४ ॥ तिविहं तिकरणसुद्धं मयरहियं दुविहठाण पुणरत्तं (रुद्धं) । विणएण कमविसुद्धं चउस्सिरं बारसावत्तं ॥ ५ ॥ दुओणयं अहाजायं एयं काऊण तस्स किइकम्मं । भत्तीइ भरियहियओ हरिसवसुब्भिन्नरो- मंचो ॥ ६ ॥ उवएसहेउकुसलं तं पवयणरयणसिरिघरं भणइ । इच्छामि जाणिउं जे मरणसमाहिं समासेणं ॥ ७ ॥ अब्भुज्जयं विहारं इच्छं जिणदेसियं विउपसत्थं । नाउं महापुरिसदेसियं तु अब्भुज्जयं मरणं ॥ ८ ॥ तुब्भित्थ सामि ! सुअजलहिपारगा समणसंघनिज्जवया । तुज्झं खु पायमूले सामन्नं उज्जमिस्सामि ॥ ९ ॥ सो भरियमहुरजलहरगंभीरसरो निसन्नओ भणइ । सुण दाणि धम्मवच्छल ! मरणसमाहिं सममासेणं ॥ १० ॥ सुण जह पच्छिमकाले पच्छिमतित्थयरदेसियमुयारं । पच्छा निच्छियपत्थं उविंदि अब्भुज्जयं मरणं ॥ ११ ॥ पवजाई सव्वं काऊ- णालोयणं च सुविसुद्धं । दंसणनाणचरित्ते निस्सल्लो विहर चिरकालं ॥ १२ ॥ आउव्वेयसमत्ती तिगिच्छिए जह विसारओ विज्जो । रोआयंकागहिओ सो निरुयं आउरं कुणइ ॥ १३ ॥ एवं पवयणसुयसारपारगो सो चरित्तसुद्धीए । पायच्छित्तविहिन्नू तं अणगारं विसोहेइ ॥ १४ ॥ भणइ य तिविहा भणिया सुविहिय ! आराहणा जिणिंदेहिं । सम्मत्तम्मि य पढमा नाणचरित्तेहिं दो अण्णा ॥ १५ ॥ सदहगा पत्तियगा रोयगा जे य वीरवयणस्स । सम्मत्तमणुसरंता दंसणआराहगा हुंति ॥ १६ ॥ संसारसमावण्णे य छव्विहे मुक्खमस्सिए चेव । एए दुविहे जीवे आणाए

१३५ मरणसमाधिप्रकीर्णकं, ७॥६॥-१-१७

मुनि दीपरत्तसागर

सहहे निचं ॥ ७ ॥ धम्माधम्मागासं च पुग्गले जीवमत्थिकायं च । आणाइ सहहंता सम्मत्ताराहगा भणिया ॥ ८ ॥ अरहंतसिद्धचेइयगुरुसु सुयधम्मसाहुवग्गे य । आयरियउवज्झाए
 पव्वयणे सव्वसंघे य ॥ ९ ॥ एएसु भत्तिजुत्ता पूयंता अहरहं अणणमणा । सम्मत्तमणुसरिन्ता परित्तसंसारिया हुंति ॥ २० ॥ सुविहिय ! इमं पइण्णं असहहंतेहिं नेगजीवेहिं । बालमरणाणि
 तीए मयाइं काले अणंताइं ॥ १ ॥ एगं पंडियमरणं मरिऊण पुणो बहूणि मरणाणि । न मरंति अप्पमत्ता चरित्तमाराहियं जेहिं ॥ २ ॥ दुविहम्मि अहक्खाए सुसंबुडा पुव्वसंगओ मुक्का ।
 जे उ चयंति सरीरं पंडियमरणं मयं तेहिं ॥ ३ ॥ एयं पंडियमरणं जे धीरा उवगया उवाएणं । तस्स उवाए उ इमा परिकम्मविही उ जुंजीया ॥ ४ ॥ जे कुम्मसंखताडणमारुयजियगगण-
 पंकयतरूणं । सरिकप्पा सुयकप्पियआहारणीहारचिट्ठागा ॥ ५ ॥ निचं तिदंडविरया तिगुत्तिगुत्ता तिसल्लनिस्सल्ला । तिविहेण अप्पमत्ता जगजीवदयावरा समणा ॥ ६ ॥ पंचमहव्वयसु-
 त्थिय संपुण्णचरित्त सीलसंजुत्ता । तह तह मया महेसी हवंति आराहगा समणा ॥ ७ ॥ इक्कं अप्पाणं जाणिऊण काऊण अत्तहिययं च । तो नाणदंसणचरित्ततवेसु सुठिया मुणी हुंति ॥ ८ ॥
 परिणामजोगसुद्धा दोसु य दो दो निरासयं पत्ता । इहलोए परलोए जीवियमरणासए चेव ॥ ९ ॥ संसारबंधणाणि य रागदोसनियलाणि छित्तूणं । सम्मदंसणसुनिसियसुतिक्खधिइमंड-
 लग्गेणं ॥ ३० ॥ दुप्पणिहिए य पिहिऊण तिभि तिहिं चेव गारव विमुक्का । कायं मणं च वायं मणवयसा कायसा चेव ॥ १ ॥ तवपरसुणा य छित्तूण तिणि उजुखंतिविहियनिसिएण ।
 दुग्गइमग्गा नरण मणवयसाकायए दंडे ॥ २ ॥ तं नाऊण कसाए चउरो पंचहि य पंच हन्तूणं । पंचासवे उदिण्णे पंचहि य महव्वयगुणेहिं ॥ ३ ॥ छजीवनिकाए रक्खिऊण छलदोसव-
 ज्जिया जइणो । तिगलेसापरिहीणा पच्छिमलेसातिगजुआ य ॥ ४ ॥ एक्कगदुगतिगचउपणसत्तद्वगनवदसगठाणेसु । असुहेसु विप्पहीणा सुभेसु सइ संठिया जे उ ॥ ५ ॥ वेयण वेयावच्चे
 इरियट्ठाए य संजमट्ठाए । तह पाणवत्तियाए छट्ठं पुण धम्मचिंताए ॥ ६ ॥ छसु ठाणेसु इमेसु य अण्णयरे कारणे समुप्पण्णे । कडजोगी आहारं करंति जयणानिमित्तं तु ॥ ७ ॥ जोएसु
 किलायंता सरीरसंकप्पचेट्ठमचयंता । अविकप्पवज्जभीरु उविति अब्भुजयं मरणं ॥ ८ ॥ आयंके उवसग्गे तित्तिक्खया बंधचेरगुत्तीसु । पाणिदया तवहेउं सरीरपरिहार वुच्छेयो ॥ ९ ॥
 पडिमासु सीहनिक्कीलियासु घोरे अ(सु)भिग्गहाईसु । छच्चिय अब्भितरए बज्जे अ तवे समणुरत्ता ॥ ४० ॥ अविकलसीलायारा पडिवन्ना जे उ उत्तमं अट्ठं । पुव्विल्लाण इमाण य भणिआ
 आराहणा चेव ॥ १ ॥ जह पुव्वदुअगमणो करणविहीणोऽवि सागरे पोओ । तीरासन्नं पावइ रहिओऽवि अवल्लगाईहिं ॥ २ ॥ तह सुकरणो महेसी तिकरण आराहओ धुवं होइ । अह लहइ
 उत्तमट्ठं तं अइलाभत्तणं जाण ॥ ३ ॥ एस समासो भणिओ परिणामवसेण सुविहियजणस्स । इत्तो जह करणिजं पंडियमरणं तहा सुणह ॥ ४ ॥ फासेहंति चरित्तं सव्वं सुहसीलयं पज-
 हिऊणं । घोरं परीसहचमुं अहियासित्तो धिइबलेणं ॥ ५ ॥ सदे रूवे गंधे रसे अ फासे अ निग्घिणधिईए । सवेसु कसाएसु अ निहंतु परमो सया होहि ॥ ६ ॥ चइऊण कसाए इंदिए अ
 सव्वे अ गारवे हंतुं । तो मल्लियरागदोसो करेह आराहणासुद्धिं ॥ ७ ॥ दंसणनाणचरित्ते पव्वजाईसु जो अ अइयारो । तं सव्वं आलोयहि निरवसेसे पणिहियप्पा ॥ ८ ॥ जह कंटएण विद्धो
 सव्वंगे वेयणदिओ होइ । तह चेव उद्वियंमि उ निस्सल्लो निव्वुओ होइ ॥ ९ ॥ एवमणुद्वियदोसो माइल्लो तेण दुक्खिओ होइ । सो चेव चत्तदोसो सुविसुद्धो निव्वुओ होइ ॥ ५० ॥ रागदो-
 साभिहया ससल्लमरणं मरंति जे मूढा । ते दुक्खसल्लबहुला भमंति संसारकंतारे ॥ १ ॥ जे पुण तिगारवजडा निस्सल्ला दंसणे चरित्ते य । विहरंति मुक्कसंगा खवंति ते सव्वदुक्खाइं ॥ २ ॥
 सुचिरमवि संकिलिट्ठं विहरितं ज्ञाणसंवरविहीणं । नाणी संवरजुत्तो जिणइ अहोरत्तमित्तेणं ॥ ३ ॥ जं निजरेइ कम्मं असंबुडो सुबहुणाऽवि कालेणं । तं संबुडो तिगुत्तो खवेइ ऊसाहमि-
 त्तेणं ॥ ४ ॥ सुबहुस्सुयावि संता जे मूढा सीलसंजमगुणेहिं । न करंति भावसुद्धिं ते दुक्खनिभेलणा हुंति ॥ ५ ॥ जे पुण सुयसंपन्ना चरित्तदोसेहिं नोवल्लिप्पंति । ते सुविसुद्धचरित्ता करंति
 दुक्खक्खयं साहू ॥ ६ ॥ पुव्वमकारियजोगो समाहिकामोऽवि मरणकालम्मि । न भवइ परीसहसहो विसयसुहपराइओ जीवो ॥ ७ ॥ तंएवं जाणंतो महत्तरं लाहगं सुविहिएसु । दंस-
 णचरित्तमुद्धीइ निस्सल्लो विहर तं धीर ! ॥ ८ ॥ इत्थ पुण भावणाओ पंच इमा हुंति संकिलिट्ठाओ । आराहंत सुविहिया जा निचं वज्जणिजाओ ॥ ९ ॥ कंदप्पा देवकिक्खिस अभिओगा
 आसुरी य संमोहा । एयाउ संकिलिट्ठा असंकिलिट्ठा हवइ छट्ठा ॥ ६० ॥ कंदप्प कोकुयाइय दवसीलो निचहासणकहाओ । विम्हावित्तो उ परं कंदप्पं भावणं कुणइ ॥ १ ॥ नाणस्स केव-
 लीणं धम्मायरियस्स संघसाहूणं । माई अवण्णवाई किच्चिसियं भावणं कुणइ ॥ २ ॥ मंताभिओगं कोउग भूईकम्मं च जो जणे कुणइ । सायरसइडिहहेउं अभिओगं भावणं कुणइ ॥ ३ ॥
 अणुबद्धरोसवुग्गहसंपत्त तहा निमित्तपडिसेवी । एएहिं कारणेहिं आसुरियं भावणं कुणइ ॥ ४ ॥ उम्मग्गदेसणा नाण (मग्ग) दूसणा मग्गविप्पणासो अ । मोहेण मोहयंतंति भावणं जाण
 सम्मोहं ॥ ५ ॥ एयाउ पंच वज्जिय इणमो छट्ठीइ विहर तं धीर ! । पंचसमिओ तिगुत्तो निस्संगो सव्वसंगेहिं ॥ ६ ॥ एयाए भावणाए विहर विसुद्धाइ दीहकालम्मि । काऊण अंतसुद्धिं
 दंसणनाणे चरित्ते य ॥ ७ ॥ पंचविहं जे सुद्धिं पंचविहविवेगसंजुयमकाउं । इह उवणमंति मरणं ते उ समाहिं न पाविति ॥ ८ ॥ पंचविहं जे सुद्धिं पत्ता निखिलेण निच्छियमईया । पंच-
 विहं च विवेगं ते हु समाहिं परं पत्ता ॥ ९ ॥ लहिऊणं संसारे सुदुल्लहं कहवि माणुसं जम्मं । न लहंति मरणदुलहं जीवा धम्मं जिणक्खायं ॥ ७० ॥ किच्छाहि पावियम्मि (२३४)

सामण्णे कम्मसत्तिओसत्ता । सीयंति सायदुलहा पंकोसन्नो जहा नागो ॥ १ ॥ जह कागणीइ हेउं मणिरयणाणं तु हारए कोडिं । तह सिद्धसुहपरुक्खा अबुहा सज्जंति कामेसुं ॥ २ ॥ चोरो
 रक्खसपहओ अत्थत्थी हणइ पंथियं मूढो । इय लिंगी सुहरक्खसपहओ विसयाउरो धम्मं ॥ ३ ॥ तेसुवि अलद्धपसरा अवियण्हा दुक्खिया गयमईया । समुविंति मरणकाले पगामभयभे-
 रवं नरयं ॥ ४ ॥ धम्मो न कओ साहु न जेमिओ न य नियंसियं सण्हं । इण्हि परं परासु(प्र० रु)त्ति य नेव य पत्ताइं सुक्खाइं ॥ ५ ॥ साहूणं नोवकयं परलोयच्छेय संजमो न कओ ।
 दुहओऽवि तओ विहलो अह जम्मो धम्मरुक्खाणं ॥ ६ ॥ दिक्खं मइलेमाणा मोहमहावत्तसागराभिहया । तस्स अपडिक्कमंता मरंति ते बालमरणाइं ॥ ७ ॥ इय अवि मोहपउत्ता मोहं
 मोत्तूण गुरुसगासम्मि । आलोइय निस्सह्ता मरिउं आराहगा तेऽवि ॥ ८ ॥ इत्थ विसेसा भण्णइ छलणा अवि नाम हुज्ज जिणकप्पो । किं पुण इयरमुणीणं तेण विही देसिओ इणमो
 ॥ ९ ॥ अप्पविहाणी जाहे धीरा सुयसारझरियपरमत्था । ते आयरिय विदिन्नं उविंति अब्भुजयं मरणं ॥ १० ॥ आलोयणाइ संलेहणाइ खमणाइ काल उस्सग्गे । ओगासे संथारे निसग्ग
 वेरग्ग मुक्खाए ॥ १ ॥ झाणविसेसो लेसा सम्मत्तं पायगमणयं चेव । चउदसओ एस विही पढमो मरणंमि नायवो ॥ २ ॥ विणओवयार माणस्स भंजणा पूयणा गुरुजणस्स । तित्थयराण
 य आणा सुयधम्माऽऽराहणाऽकिरिया ॥ ३ ॥ छत्तीसाठाणेसु य जे पवयणसारझरियपरमत्था । तेसिं पासे सोही पण्णत्ता धीरपुरिसेहिं ॥ ४ ॥ वयछक्क कायछक्कं बारसगं तह अकप्प गिहि-
 भाणं । पलियं क गिहिनिसिज्जा ससोभ पलिमज्जण सिणाणं ॥ ५ ॥ आयाखं च उवधारवं च ववहारविहिविहिभू य । उब्बील्ला य धीरा परूवणाए विहिण्णू या ॥ ६ ॥ तह य अवायवि-
 हिभू निज्जवगा जिणमयम्मि गहियत्था । अपरिस्साई य तहा विस्सासरहस्सनिच्छिइडा ॥ ७ ॥ पढमं अट्टारसगं अट्ट य ठाणाणि एव भणियाणि । इत्तो दस ठाणाणि य जेसु उवट्टावणा
 भणिया ॥ ८ ॥ अणवट्टतिगं पारंचिगं च तिगमेय छहि गिहीभूया । जाणंति जे उ एए सुअरयणकरंडगा सूरी ॥ ९ ॥ सम्मईसणचत्तं जे य वियाणंति आगमविहिन्नू । जाणंति चरित्ताओ
 य निग्गयं अपरिसेसाओ ॥ १० ॥ जो आरंभे वट्टइ चिअत्तकिच्चो अणणुतावी य । सोगो अ भवे दसमो जेसुवट्टावणा भणिया ॥ १ ॥ एएसु विहिविहण्णू छत्तीसाठाणएसु जे सूरी । ते
 पवयणसुहकेऊ छत्तीसगुणत्ति नायवो ॥ २ ॥ तेसिं मेरुमहोयहिमेयणिससिसूरसरिसकप्पाणं । पायमूले अ विसोही करणिज्जा सुविहियजणेणं ॥ ३ ॥ काइयवाइयमाणसियसेवणं दुप्पओ-
 गसंभूयं । जो अइयारो कोई तं आलोए अगूहितो ॥ ४ ॥ अमुगंमि इओ काले अमुगत्ये अमुगगामभावेणं । जं जह निसेवियं खलु जेण य सव्वं तहाऽऽलोए ॥ ५ ॥ मिच्छादंसणसहं
 मायासहं नियाणसहं च । तं संखेवा दुविहं दवे भावे य बोद्धव्वं ॥ ६ ॥ वि(ति)विहं तु भावसहं दंसणनाणे चरित्तजोगे य । सच्चित्ताचित्तेऽविय मीसए यावि दव्वंमि ॥ ७ ॥ सुहुमंमि
 भावसहं अणुद्वरित्ता उ जो कुणइ कालं । लज्जाय गारवेण य नहु सो आराहओ भणिओ ॥ ८ ॥ तिविहंपि भावसहं समुद्वरित्ता उ जो कुणइ कालं । पव्वज्जाई सम्मं स होइ आराहओ
 मरणे ॥ ९ ॥ तम्हा सुत्तरमूलं अविकूलमविद्धुयं अणुविग्गो । निम्मोहियमणिगूढं सम्मं आलोअए सव्वं ॥ १० ॥ जह बालो जंपंतो कज्जमकज्जं च उज्जुयं भणइ । तं तह आलोएजा
 मायामयविप्पमुक्को य ॥ १ ॥ कयपावोऽवि मणूसो आलोइय निदिउं गुरुसगासे । होइ अइरेगलहुओ ओहरियभरोव्व भारवहो ॥ २ ॥ लज्जाइ गारवेण य जे नालोयंति गुरुसगासम्मि ।
 धंतंमि सुयसमिद्धा न हु ते आराहगा हुंति ॥ ३ ॥ जह सुकुसलोऽवि विज्जो अन्नस्स कहेइ अत्तणो वाहिं । तं तह आलोयव्वं सुदुत्तुवि ववहारकुसलेणं ॥ ४ ॥ जं पुव्वं तं पुव्वं जहाणुपुव्वि
 जहक्कमं सव्वं । आलोइज्ज सुविहिओ कमकालविहिं अभिंदंतो ॥ ५ ॥ अत्तंपरजोगेहि य एवं समुवट्टिए पओगेहिं । अमुगेहि य अमुगेहि य अमुयगसंठाणकरणेहि ॥ ६ ॥ वण्णेहि य गंधेहि
 य सहफरिसरसखगंधेहिं । (सदेहि य रसफरिसठाणेहिं) । पडिसेवणा कया पज्जवेहिं कया जेहि य जहि च ॥ ७ ॥ जो जोगओ अपरिणामओ अ दंसणचरित्तअइयारो । छट्ठाणवाहिरो
 वा छट्ठाणव्वंतरो वावि ॥ ८ ॥ तं उज्जुभावपरिणउ रागं दोसं च पयणु काऊणं । तिविहेण उद्वरिज्जा गुरुपामूले अगूहितो ॥ ९ ॥ नवि तं सत्थं च विसं च दुप्पउत्तुव्व कुणइ वेयालो । जंतव
 दुप्पउत्तं सप्पुव्व पमाइणो कुद्धो ॥ ११० ॥ जं कुणइ भावसहं अणुद्वियं उत्तमट्टकालम्मि । दुद्धहवोहीयत्तं अणंतसंसारियत्तं च ॥ १ ॥ तो उद्वरंति गारवरहिया मूलं पुणव्वभल्लयाणं ।
 मिच्छादंसणसहं मायासहं नियाणं च ॥ २ ॥ रागेण व दोसेण व भएण हासेण तह पमाएणं । रोगेणायंकेण व वत्तीइ पराभिओगेणं ॥ ३ ॥ गिहिविज्जापडिएण व सपक्खपरधम्मिओ-
 वसग्गेणं । तिरियंजोणिगएण व दिव्वमणूसोवसग्गेणं ॥ ४ ॥ उवहीइ व नियडीइ व तह सावयपेहिएण व परेणं । अप्पाण भएण कयं परस्स छंदाणुवत्तीए ॥ ५ ॥ सहसकारमणाभोगओ
 अ जं पवयणाहिगारेणं । सन्निकरणे विसोही पुण्णागारो य पण्णत्तो ॥ ६ ॥ उज्जुअमालोइत्ता इत्तो अकरणपरिणामजोगपरिसुद्धो । सो पयणुइ पइक्कमं सुग्गइमग्गं अभिमुहेइ ॥ ७ ॥
 उवहीनियडिपइट्टो सोहिं जो कुणइ सोगईकामो । माई पलिकुंचंतो करेइ बुंदुछियं मूढो ॥ ८ ॥ आलोयणाइदोसे दस दोग्गइबंधणे परिहरंतो । तम्हा आलोइज्जा मायं मुत्तूण निम्सेसं ॥ ९ ॥
 जे मे जाणंति जिणा अवरहा जेसु जेसु ठाणेसु । ते तह आलोएमी उवट्टिओ सव्वभावेणं ॥ १२० ॥ एवं उवट्टियस्सवि आलोएउं विमुद्धभावस्स । जं किंचिवि विस्सरियं सहसकारेण

वा चुक्कं ॥ १ ॥ आराहओ तहवि सो गारवपरिकुंचणामयविहूणो । जिणदेसियस्स धीरो सहहगो मुत्तिमग्गस्स ॥ २ ॥ आकंपण अणुमाणण जंदिटं बायरं च सुहुमं च । छन्नं सदाउल्लं बहुजण अन्नं तस्सेवी ॥ ३ ॥ आलोयणाइ दोसे दस दुग्गइवड्डणा पमुत्तुणं । आलोइज्ज सुविहिओ गारवमायामयविहूणो ॥ ४ ॥ तो परियागं च बलं आगम कालं च कालकरणं च । पुरिसं जीअं च तहा खित्तं पडिसेवणविहिं च ॥ ५ ॥ जोग्गं पायच्छित्तं तस्स अ दाऊण बिंति आयरिया । दंसणनाणचरित्ते तवे अ कुणमप्पमायंति ॥ ६ ॥ अणसणमूणोयरिया वित्ति-
 च्छेओ रसस्स परिचाओ । कायस्स परिकिल्लेसो छट्ठो संलीणया चेव ॥ ७ ॥ विणए वेयावच्चे पायच्छित्ते विवेग सज्झाए । अब्भितरं तवविहिं छट्ठं ज्ञाणं वियाणाहि ॥ ८ ॥ बारसविह-
 म्मिवि तवे अब्भितरबाहिरे कुसलदिट्ठे । नवि अत्थि नवि य होही सज्झाय समं तवोकम्मं ॥ ९ ॥ जे पयणुभत्तपाणा सुयहेऊ ते तवस्सिणो समए । जो अ तवो सुयहीणो बाहिरयो सो
 छुहाहारो ॥ १३० ॥ छट्ठमदसमदुवालसेहिं अबहुसुयस्स जा सोही । तत्तो बहुतरगुणिया हविज्ज जिमियस्स नाणिस्स ॥ १ ॥ कल्लं कल्लं पि वरं आहारो परिमिओ अ पंतो अ । न य
 स्वमणो पारणए बहु बहुतरो बहुविहो होइ ॥ २ ॥ एगाहेण तवस्सी हविज्ज नत्थित्थं संसओ कोइ । एगाहेण सुयहरो न होइ धंतं पि तूरमाणो ॥ ३ ॥ सो नाम अणसणतवो जेण मणो
 मंगुलं न चित्तेइ । जेण न इंदियहाणी जेण य जोगा न हायंति ॥ ४ ॥ जं अन्नाणी कम्मं खवेइ बहुआहिं वासकोडीहिं । तं नाणी तिहिं गुत्तो खवेइ ऊत्तासमित्तेणं ॥ ५ ॥ नाणे आउत्ताणं
 नाणीणं नाणजोगजुत्ताणं । को निजरं तुलिज्जा चरणे य परक्कमंताणं ? ॥ ६ ॥ नाणेण वज्जणिज्जं वज्जिज्जइ किज्जई य करणिज्जं । नाणी जाणइ करणं कज्जमकज्जं च वजेउं ॥ ७ ॥ नाणस-
 हियं चरित्तं नाणं संपायगं गुणसयाणं । एस जिणाणं आणा नत्थि चरित्तं विणा णाणं ॥ ८ ॥ नाणं सुसिक्खियच्चं नरेण लद्धुण दुल्लहं बोहिं । जो इच्छइ नाउं जे जीवस्स विसोहणामग्गं
 ॥ ९ ॥ नाणेण सबभावा णजंती सबजीवलोयंमि । तम्हा नाणं कुसलेण सिक्खियच्चं पयत्तेणं ॥ १४० ॥ न हु सक्का नासेउं नाणं अरहंतभासियं लोए । ते धम्मा ते पुरिसा नाणी य चरित्त-
 जुत्ता य ॥ १ ॥ बंधं मुक्खं गइरागइं च जीवाण जीवलोयम्मि । जाणंति सुयसमिद्धा जिणसासणचेइयविहिण्णू ॥ २ ॥ भइं सुबहुसुयाणं सबपयत्थेसु पुच्छणिजाणं । नाणेण जोऽवयारे
 सिद्धिं पि गएसु सिद्धेसु ॥ ३ ॥ किं इत्तो लट्ठयरं अच्छेरययं व सुंदरतरं वा ? । चंदमिव सबलोगा बहुस्सुयमुहं पलोयंति ॥ ४ ॥ चंदाउ नीइ जुण्हा बहुस्सुयमुहाओ नीइ जिणवयणं । जं
 सोऊण सुविहिया तरंति संसारकंतारं ॥ ५ ॥ चउदसपुबधराणं ओहीनाणीण केवलीणं च । लोगतमपुरिसाणं तेसिं नाणं अभिजाणं ॥ ६ ॥ नाणेण विणा करणं न होइ नाणं पि करणहीणं
 तु । नाणेण य करणेण य दोहिवि दुक्खस्सुयं होइ ॥ ७ ॥ दढमूलमहाणंमिवि वरमेगोऽवि य सुयसीलसंपण्णो । मा हु सुयसीलविगला काहिसि मा(प्र० ना)णं पवयणम्मि ॥ ८ ॥ तम्हा सुय-
 म्मि जोगो कायवो होइ अप्पमत्तेणं । जेणऽप्पाण परं पि य दुक्खसमुदाओ तारेइ ॥ ९ ॥ परमत्थम्मि सुदिट्ठे अविणट्ठेसु तवसंजमगुणेसु । लब्भइ गई विसुद्धा सरीरसारे विणट्ठम्मि ॥ १५० ॥
 अविरहिया जस्स मई पंचहिं समिद्धिं तिहिवि गुत्तीहिं । न य कुणइ रागदोसे तस्स चरित्तं हवइ सुद्धं ॥ १ ॥ उक्कोसचरित्तोऽविय परिवडई मिच्छभावणं कुणइ । किं पुण सम्महिट्ठी
 सरागधम्मंमि वट्ठतो ? ॥ २ ॥ तम्हा घत्तह दोसुवि काउं जे उज्जमं पयत्तेणं । सम्मत्तम्मि चरित्ते करणम्मि य मा पमाएह ॥ ३ ॥ जाव य सुई न नासइ जाव य जोगा न ते पराहीणा ।
 सद्धा व जा न हायइ इंदियजोगा अपरिहीणा ॥ ४ ॥ जाव य स्वेमसुभिक्षं आयरिया जाव अत्थि निजवगा । इइटीगारवरहिया नाणचरणदंसणंमि रया ॥ ५ ॥ ताव स्वमं काउं जे सरी-
 रनिकस्वेवणं विउपसत्थं । समयपडागाहरणं सुविहियइट्ठं नियमजुत्तं ॥ ६ ॥ हंदि अणिच्चा सद्धा सुई य जोगा य इंदियाइं च । तम्हा एयं नाउं विहरह तवसंजमुज्जुत्ता ॥ ७ ॥ ता एयं
 नाऊणं ओवायं नाणदंसणचरित्ते । धीरपुरिसाणुचिन्नं करंति सोहिं सुयसमिद्धा ॥ ८ ॥ अब्भितरबाहिरियं अह ते काऊण अप्पणो सोहिं । तिहिहेण तिविहकरणे तिविहे काले वियड-
 भावा ॥ ९ ॥ परिणामजोगसुद्धा उवहिविवेगं च गणविसग्गे य । अज्जाइयउवस्सयवज्जणं च विगईविवेगं च ॥ १६० ॥ उग्गमउप्पायणएसणाविसुद्धिं च परिहरणसुद्धिं । सन्निहिंसनिच-
 यंमि य तववेयावच्चकरणे य ॥ १ ॥ एवं करंतु सोहिं नवसारयसलिलनहयलसभादा । कमकालदवपज्जवत्तपरजोगकरणे य ॥ २ ॥ तो ते कयसोहीया पच्छित्ते फासिए जहाथामं । पुप्फा-
 वकिन्नयम्मि य तवम्मि जुत्ता महासत्ता ॥ ३ ॥ तो इंदियपरिकम्मं करंति विसयसुहनिग्गहसमत्था । जयणाइ अप्पमत्ता रागदोसे पयणुयंता ॥ ४ ॥ पुबमकारियजोगा समाहिकामावि
 मरणकालम्मि । न भवंति परीसहसहा विसयसुहपमोइया अप्पा ॥ ५ ॥ इंदियसुहसाउलओ घोरपरीसहपराइयपरज्झो । अकयपरिकम्म कीवो मुज्झइ आराहणाकाले ॥ ६ ॥ वाहंति
 इंदियाइं पुबिं दुन्नियमियप्पयाराइं । अकयपरिकम्म कीवं मरणे सुअसंपउत्तं पि ॥ ७ ॥ आगममयप्पभाविय इंदियसुहलोलुयापइट्ठस्स । जइवि मरणे समाही हुज्ज न सा होइ बहुयाणं
 ॥ ८ ॥ असमत्तसुओऽवि मुणी पुबिं सुकयपरिकम्मपरिहत्थो । संजमनियमपइन्नं सुहुमत्तहिओ समण्णेइ ॥ ९ ॥ न चयंति किंचि काउं पुबिं सुकयपरिकम्मजोगस्स । खोहं परीसहचमू
 थिइबलपराइया मरणे ॥ १७० ॥ तो तेऽवि पुबचरणा जयणाए जोगसंगहविहीहिं । तो ते करंति दंसणचरित्तसइ भावणाहेउं ॥ १ ॥ जो पुव्वभाविया किर होइ सुई चरणदंसणे बहुहा ।

सा होइ बीयभूया कयपरिकम्मस्स मरणम्मि ॥ २ ॥ तं फासेहि चरित्तं तुमंपि सुहसीलयं पमुत्तूणं । सव्वं परीसहचमुं अहियासंतो धिइबलेणं ॥ ३ ॥ सदे रूवे गंधे रसे य फासे य सुविहि-
 य ! जिणेहि । सव्वेसु कसाएसु य निग्गहपरमो सया होहि ॥ ४ ॥ सव्वे रसे पणीए निज्जुहेऊण पंतलुक्खेहिं । अन्नयरेणुवहाणेण संलिहे अप्पगं कमसो ॥ ५ ॥ संलेहणा य दुविहा अन्भितरिया
 य बाहिरा चेव । अन्भितरिया कसाए बाहिरिया होइ य सरीरे ॥ ६ ॥ उग्गमउप्पायणएसणाविसुद्धेण अण्णपाणेणं । मियविरसलुक्खलूहेण दुब्बलं कुणसु अप्पागं ॥ ७ ॥ उद्धीणोद्धीणेहि य
 अहवण एगंतवद्धमाणेहिं । संलिह सरीरमेयं आहारविहिं पयणुयंतो ॥ ८ ॥ ततो अणुपुव्वेणाहारं उवहिं सुओवएसेणं । विविहतवोकम्मेहि य इंदियविक्कीलियाईहिं ॥ ९ ॥ तिविहाहिं एस-
 णाहि य विविहेहि अभिग्गहेहि उग्गेहिं । संजममविराहितो जहाबलं संलिह सरीरं ॥ १० ॥ विविहाहि व पडिमाहि य बलवीरियजई य संपहोइ सुहं । ताओवि न बाहिंती जहक्कमं संलि-
 हंतम्मि ॥ १ ॥ छम्मासिया जहन्ना उक्कोसा बारसेव वरिसाइं । आयंबिलं महेसी तत्थ य उक्कोसयं बिति ॥ २ ॥ छट्ठमदसमदुवालसेहिं भत्तेहिं चित्तकट्ठेहिं । मियलहुकं आहारं करेहि
 आयंबिलं विहिणा ॥ ३ ॥ परिवड्ढिओवहाणो ण्हारुविरावियवियडपांसुलिकडीओ । संलिहियतणुसरीरो अज्झप्परओ मुणी निच्चं ॥ ४ ॥ एवं सरीरसंलेहणाविहिं बहुविहंपि फासितो ।
 अज्झवसाणविसुद्धिं खणंपि तो मा पमाइत्था ॥ ५ ॥ अज्झवसाणविसुद्धीविबज्जिया जे तवं विगिट्ठमवि । कुव्वंति बाल्लेसा न होइ सा केवला सुद्धी ॥ ६ ॥ एयं सरागसंलेहणाविहिं जइ
 जई समायरइ । अज्झप्पसंजुयमई सो पावइ केवलं सुद्धिं ॥ ७ ॥ निखिला फासेयवा सरीरसंलेहणाविही एसा । इत्तो कसायजोगा अज्झप्पविहिं परम वुच्छं ॥ ८ ॥ कोहं खमाइ माणं
 मद्दवया अज्जवेण मायं च । संतोसेण व लोहं निज्जिण चत्तारिवि कसाए ॥ ९ ॥ कोहस्स व माणस्स व मायालोभेसु वा न एएसिं । वच्चई वसं खणंपि हु दुग्गगईवड्ढणकराणं ॥ १० ॥
 एवं तु कसायगिं संतोसेणं तु विज्झवेयवो । रागदोसपवत्तिं वज्जेमाणस्स विज्झाइ ॥ १ ॥ जावंति केइ ठाणा उदीरगा हुंति हु (इह) कसायाणं । ते उ सया वज्जंतो विमुत्तसंगो मुणी
 विहरे ॥ २ ॥ संतोवसंतधिइमं परीसहविहिं व समहियासंतो । निस्संगयाइ सुविहिय ! संलिह मोहे कसाए य ॥ ३ ॥ इट्ठाणिट्ठेसु सया सदफरिसरसरूवगंधेहिं । सुहदुक्खनिविसेसो जियसं-
 गपरीसहो विहरे ॥ ४ ॥ समिईसु पंचसमिओ जिणाहि तं पंच इंदिए सुट्ठु । तिहिं गारवेहिं रहिओ होइ तिगुत्तो य दंडेहिं ॥ ५ ॥ सन्नासु आसवेसु अ अट्टे रुहे अ तं विसुद्धप्पा । रागदो-
 सपवंचे निज्जिणिउं सव्वणोज्जुत्तो ॥ ६ ॥ को दुक्खं पाविज्जा ? कस्स य सुक्खेहिं विम्हओ हुज्जा ? । को वा न लभिज्ज मुक्खं ? रागदोसा जइ न हुज्जा ॥ ७ ॥ नवि नं कुणइ अमित्तो
 सुट्ठुविय विराहिओ समत्थोवि । जं दोवि अनिग्गहिया करंति रागो य दोसो य ॥ ८ ॥ तं मुयह रागदोसे सेयं चित्तेह अप्पणो निच्चं । जं तेहिं इच्छह गुणं तं बुक्कह बहुतरं पच्छा ॥ ९ ॥
 इहलोए आयासं अयसं च करंति गुणविणासं च । पसवंति य परलोए सारीरमणोगए दुक्खे ॥ १० ॥ धिद्धी अहो अकज्जं जं जाणंतोऽवि रागदोसेहिं । फलमउलं कडुयरसं तं चेव
 निसवए जीवो ॥ १ ॥ तं जइ इच्छसि गंतुं तीरं भवसायरस्स घोरस्स । तो तवसंजमभंडं सुविहिय ! गिण्हाहि तूरंतो ॥ २ ॥ बहुभयकरदोसाणं सम्मत्तचरित्तगुणविणासाणं । न हु वसमा-
 गंतव्वं रागदोसाण पावाणं ॥ ३ ॥ जं न लहइ सम्मत्तं लद्धूणवि जं न एइ वेरगं । विसयसुहेसु य रज्जइ सो दोसो रागदोसाणं ॥ ४ ॥ भवसयसहस्सदुलहे जाइजरामरणसागरुत्तारे ।
 जिणवयणम्मि गुणागर ! खणमवि मा काहिसि पमायं ॥ ५ ॥ दव्वेहिं पज्जवेहि य ममत्तसंगेहिं सुट्ठुवि जियप्पा । निप्पणयपेमरागो जइ सम्मं नेइ मुक्खत्थं ॥ ६ ॥ एवं कयसंलेहं अ-
 न्भितरबाहिरम्मि संलेहे । संसारमुक्खबुद्धी अनियाणो दाणि विहराहि ॥ ७ ॥ एवं कहिय समाही तहविह संवेगकरणगंभीरो । आउरपच्चक्खाणं पुणरवि सीहावलोएणं ॥ ८ ॥ न हु सा
 पुणरुत्तविही जा संवेगं करेइ भण्णंती । आउरपच्चक्खाणे तेण कहा जोइया भुज्जो ॥ ९ ॥ एस करेमि पणामं तित्थयराणं अणुत्तरगईणं । सव्वेसिं च जिणाणं सिद्धाणं संजयाणं च ॥ १० ॥
 जंकिंचिवि दुच्चरियं तमहं निंदामि सव्वभावेणं । सामाइयं च तिविहं तिविहेण करेमऽणागारं ॥ १ ॥ अन्भितरं च तह बाहिरं च उवहीं सरीर सा (रमा) हारं । मणवयणकायतिकरणसुद्धोऽहं
 मित्ति पकरेमि ॥ २ ॥ बंधपओसं हरिसं रइमरइं दीणयं भयं सोगं । रागदोस विसायं उस्सुगभावं च पयहामि ॥ ३ ॥ रागेण व दोसेण व अहवा अकयन्नुया पडिनिवेसेणं । जो मे किंचिवि
 भणिओ तमहं तिविहेण खामेमि ॥ ४ ॥ सव्वेसु य दव्वेसु य उवट्ठिओ एस निम्ममत्ताए । आलंबणं च आया दंसणनाणे चरित्ते य ॥ ५ ॥ आया पच्चक्खाणे आया मे संजमे तवे जोगो ।
 जिणवयणविहिविळ्ळगो अवसेसविहिं तु दंसेहि ॥ ६ ॥ मूलगुण उत्तरगुणा जे मे नाराहिया पमाएणं । ते सव्वे निंदामि पडिक्कमे आगमिस्साणं ॥ ७ ॥ एगो सयंकडाई आया मे नाणदं-
 सणवल्ळक्खो । संजोगलक्खणा खलु सेसा मे बाहिरा भावा ॥ ८ ॥ पत्ताणि दुहसयाई संजोगस्सा (वसा) णुएण जीवेणं । तम्हा अणंतदुक्खं चयामि संजोगसंबंधं ॥ ९ ॥ अस्संजममण्णाणं
 मिच्छत्तं सव्वओ ममत्तं च । जीवेसु अजीवेसु य तं निंदे तं च गरिहामि ॥ १० ॥ परिजाणे मिच्छत्तं सव्वं अस्संजमं अकिरियं च । सव्वं चेव ममत्तं चयामि सव्वं च खामेमि ॥ १ ॥ जे मे
 जाणंति जिणा अवराहा जेसु जेसु ठाणेसु । ते तह आलोएमि उवट्ठिओ सव्वभावेणं ॥ २ ॥ उप्पन्ना उप्पन्ना माया अणुमग्गओ निहंतवा । आलोयणनिंदणगरिहणाहिं न पुणोत्ति या बिइयं

॥ ३ ॥ जह बालो जंपंतो कज्जमकज्जं च उज्जुयं भणइ । तं तह आलोयत्तं माय मुत्तूण निस्सेसं ॥ ४ ॥ सुबहुं पि भावसल्लं आलोएऊण गुरुसगासम्मि । निस्सल्लो संथारं उवेइ आराहओ होइ ॥ ५ ॥ अप्पं पि भावसल्लं जे णालोयंति गुम्सगासम्मि । थंति पि मुयसमिद्धा न हु ते आराहगा हुंति ॥ ६ ॥ नवि तं विसं च सत्थं च दुप्पउत्तो व कुणइ वेयालो । जंतं व दुप्पउत्तं सप्पो व पमायओ कुविओ ॥ ७ ॥ जं कुणइ भावसल्लं अणुद्वियं उत्तमट्टकालम्मि । दुल्लहबोहीयत्तं अणंतसंसारियत्तं च ॥ ८ ॥ तो उद्धरंति गारवरहिया मूलं पुणभवलयाणं । मिच्छादंसणसल्लं मायासल्लं नियाणं च ॥ ९ ॥ कयपावोऽवि मणूसो आलोइय निंदितं गुम्सगासे । होइ अइरेगलहुओ ओहरियभरुव भारवहो ॥ २३० ॥ तस्स य पायच्छित्तं जं मग्गविऊ गुरू उवइसंति । तं तह अणुचरियत्तं अणवत्थपसंगभीएणं ॥ १ ॥ दसदोसविप्पमुक्कं तम्हा सत्तं अमग्ग(गूह)माणेणं । जंकिंचि कयमकज्जं आलोए तं जहावत्तं ॥ २ ॥ सत्तं पाणारंभं पच्चक्खामित्ति अलि- यवयणं च । सत्तं अदिच्चदाणं अन्वभपरिग्गहं चेव ॥ ३ ॥ सत्तं च असणपाणं च उव्विहं जा य बाधिरा उवही । अब्भितरं च उवहिं जावजीवं तु वोसिरामि ॥ ४ ॥ कंतारे दुब्भक्खे आयंके वा महया(ई) समुप्पन्ने । जं पालियं न भग्गं तं जाणसु पालणासुद्धं ॥ ५ ॥ रागेण व दोसेण व परिणामेण व न दूसियं जं तु । तं खलु पच्चक्खाणं भावविसुद्धं मुणेयव्वं ॥ ६ ॥ पीयं थणअ- च्छीरं सागरसल्लिआउ बहुयं हुज्जा । संसारे संसरतो माऊणं अन्नमन्नाणं ॥ ७ ॥ नत्थि किर सो एसो लोए वालग्गकोडिमित्तोऽवि । संसारे संसरतो जत्थ न जाओ मओ वाऽवि ॥ ८ ॥ चुल्लसीठं किर लोए जोणीणं पमुहसयसहम्साइं । इक्किंमि य इत्तो अणंतस्वुत्तो समुप्पन्नो ॥ ९ ॥ उइदमहे तिरियम्मि य मयाणि बालमरणाणिऽणंताणि । तो ताणि संभरंतो पंडिय- मरणं मरीहामि ॥ २४० ॥ माया मित्ति पिया मे भाया भज्जन्ति पुत्त धूया अ । एयाणिऽचित्तयंतो पंडियमरणं मरीहामि ॥ १ ॥ मायापिइबंधूहिं संसारत्थेहिं पूरिओ लोगो । बहुजोणि- निवासीहिं न अ ते ताणं च सरणं च ॥ २ ॥ इक्को जायइ मरइ इक्को अणुहवइ य दुक्कयविवागं । इक्कोऽणुसरइ जीओ जरमरणचउग्गइगुविलं ॥ ३ ॥ उव्वेयणयं जम्मणमरणं नरएमु वेय- णाओ अ । एयाणि संभरंतो पंडियमरणं मरीहामि ॥ ४ ॥ इक्कं पंडियमरणं छिंदइ जाईसयाणि बहुयाणि । तं मरणं मरियव्वं जेण मओ सुम्मओ (मुक्कओ) होइ ॥ ५ ॥ कइया णु तं मुमरणं पंडियमरणं जिणेहिं पण्णत्तं । मुद्धो उद्वियसल्लो पाओवगमं मरीहामि ॥ ६ ॥ संसारचक्कवाले सव्वेऽवि य पुग्गला मए बहुसो । आहारिया य परिणामिया य न य तेमु तित्तोऽहं ॥ ७ ॥ आहारनिमित्तेणं मच्छा वच्चंतिऽणुत्तरं नरयं । सच्चिन्ताहारविहिं तेण उ मणसाऽवि निच्छामि ॥ ८ ॥ तणकट्टेणव अग्गी लवणसमुहोव नइसहस्सेहिं । न इमो जीवो सक्को तिप्पेउं कामभोगेहिं ॥ ९ ॥ लवणयमुहसामाणो दुप्पूरो धणरओ अपरिमिज्जो । न हु सक्को तिप्पेउं जीवो संसारियमुहेहिं ॥ २५० ॥ कप्पतस्संभवेसु य देवुत्तरकुरुवंसपमूएमुं । परिभोगेण न तित्तो न य नरविज्जाहरमुरेमु ॥ १ ॥ देविंदचक्कवट्ठित्ताणं रज्जाइं उत्तमा भोगा । पत्ता अणंतस्वुत्तो न यऽहं तित्ति गओ तेहिं ॥ २ ॥ पयस्वीरुच्छुरसेसु य साऊमु महोदहीसु बहुसोवि । उववन्नो न य तण्हा लिआ ते सीयलजलेहिं ॥ ३ ॥ तिविहेणवि मुहमउलं जम्हा कामरइविसयमुक्खाणं । बहुसोऽवि समणुभूयं न य तुह तण्हा परिच्छिण्णा ॥ ४ ॥ जा काइ पत्थणाओ कया मए रागदोसवसएणं । पडिबंघेण बहुविहा तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ५ ॥ हंतूण मोहजालं छित्तूण य अट्टकम्मसंकलियं । जम्मणमरणऽरहट्टं भित्तूण भवा णु मुच्चिहिसि ॥ ६ ॥ पंच य मह- वयाइं तिविहंतिविहेण आरुहेऊणं । मणवयणकायगुत्तो सज्जो मरणं पडिच्छिज्जा (लहिज्जा) ॥ ७ ॥ कोहं माणं मायं लोहं पिज्जं तहेव दोसं च । चइऊण अप्पमत्तो रक्खामि महवए पंच ॥ ८ ॥ कल्लहं अन्भक्खाणं पेमुन्नपिय परस्स परिवायं । परिवज्जितो गुत्तो रक्खामि ॥ ९ ॥ किण्हा नीला काऊ लेसा झाणाणि अप्पसत्थाणि । परिवज्जितो गुत्तो ॥ २६० ॥ तेऊ पम्हं सुक्कं लेसा झाणाणि मुप्पसत्थाणि । उवसंपन्नो जुत्तो रक्खामि ॥ १ ॥ पंचिंदियसंवरणं पंचेव निरुंभिऊण कामगुणे । अच्चासायणविरओ रक्खामि ॥ २ ॥ सत्तभयविप्पमुक्को चत्तारि निरुं- भिऊण य कसाए । अट्टमयट्टाणजइठो रक्खामि ॥ ३ ॥ मणसा मणसच्चविऊ वायासच्चेण करणसच्चेण । तिविहेण अप्पमत्तो रक्खामि ॥ ४ ॥ एवं निर्दंडविरओ निकरणमुद्धो निसल्ल- निस्सल्लो । तिविहेण अप्पमत्तो रक्खामि ॥ ५ ॥ सम्मत्तं समिईओ गुत्तीओ भावणाओ नाणं च । उवसंपन्नो जुत्तो रक्खामि ॥ ६ ॥ संगं परिजाणामि सल्लं पि य उद्धरामि तिविहेणं । गुत्ती- ओ समिईओ मज्झं ताणं च सरणं च ॥ ७ ॥ जह खुहियचक्कवाले पोयं रयणभरियं समुहम्मि । निज्जामया धरिंती कयकरणा बुद्धिसंपण्णा ॥ ८ ॥ तवपोअं गुणभरियं परीसहम्मिहि धणियमाइदं । आराहंति तह विऊ उवएसऽवलंबगा धीरा ॥ ९ ॥ जइ ताव ते मुपुरिसा आयारोवियभरा निरवयक्खा । गिरिकुहरकंदरगया साहंति य अप्पणो अट्टं ॥ २७० ॥ जइ ताव सावयाकुलगिरिकंदरविसमदुग्गमग्गेमु । थिइधणियबद्धकच्छा साहंति य उत्तमं अट्टं ॥ १ ॥ किं पुण अणगारसहायगेण वेरग्गसंगहबलेणं । परलोएण ण सक्का संसारमहोदहिं तरिउं ? ॥ २ ॥ जिणवयणमप्पमेयं महुरं कज्जामयं सुणंताणं । सक्का हु साहुमज्जा साहेउं अप्पणो अट्टं ॥ ३ ॥ धीरपुरिसपण्णत्तं सप्पुरिसनिसेवियं परमघोरं । थज्जा सिल्लानल्लगया साहिंती अप्पणो अट्टं ॥ ४ ॥ बाहेइ इंदियाइं पुव्वमकारियपइट्ट(ण)चारिस्स । अकयपरिकम्म कीवं मरणे मुअसंपउत्तंमि ॥ ५ ॥ पुव्वमकारियजोगो समाहिकामोऽवि मरणकालम्मि । न भवइ परीसहसहो विसयसुहपराइओ जीवो ॥ ६ ॥ पुव्वि कारियजोगो समाहिकामो य मरणकालम्मि । होइ उ परीसहसहो विसयसुहनिवारिओ जीवो ॥ ७ ॥ पुव्वि कारियजोगो अनियाणो (२३५)

ईहिऊण सुहभावो । ताहे मलियकसाओ सज्जो मरणं पडिच्छिज्जा ॥ ८ ॥ पावाणं पावाणं कम्माणं अप्पणो सकम्माणं । सक्का पलाइउं जे तवेण सम्मं पउत्तेणं ॥ ९ ॥ इक्कं पंडियमरणं पडिवज्जइ सुपुरिसो असंभंतो । खिप्पं सो मरणाणं काहिइ अंतं अणंतानं ॥ २८० ॥ किं तं पंडियमरणं ? काणि व आलंबणाणि भणियाणि ? । एयाइं नाऊणं किं आयरिया पसंसंति ? ॥ १ ॥ अणसणपाउवगमणं आलंबणं ज्ञाण भावणाओ य । एयाइं नाऊणं पंडियमरणं पसंसंति ॥ २ ॥ इंदियसुहसाउलओ घोरपरीसहपराइयपरज्झो । अकयपरिकम्म कीवो मुज्झइ आराहणाकाले ॥ ३ ॥ लज्जाइ गारवेणं बहुस्सुयमएण वावि दुच्चरियं । जे न कहिति गुरूणं न हु ते आराहगा हुंति ॥ ४ ॥ सुज्झइ दुक्करकारी जाणइ मग्गंति पावए कित्तिं । विणिगूहिंतो निंदं तम्हा आलोयणा सेया ॥ ५ ॥ अग्गिम्मि य उदयम्मि य पाणेसु य पाणवीयहरिएसुं । होइ मओ संथारो पडिवज्जइ जो(जइ) असंभंतो ॥ ६ ॥ नवि कारणं तणमओ संथारो नवि य फासुया मूमी । अप्पा खलु संथारो होइ विमुद्धो मरंतस्स ॥ ७ ॥ जिणवयणमणुगया मे होउ मई ज्ञाणजोगमल्लीणा । जह तम्मि देसकाले अमूढसन्नो चए देहं ॥ ८ ॥ जाहे होइ पमत्तो जिणवयणेण रहिओ अणायत्तो । ताहे इंदियचोरा करेति तवसंजमविलोमं(वं) ॥ ९ ॥ जिणवयणमणुगयमई जंबेलं होइ संवरपविट्ठो । अग्गीव वायसहिओ समूलडालं डहइ कम्मं ॥ २९० ॥ जह डहइ वायसहिओ अग्गी हरिएवि रुक्खसंधाए । तह पुरिसकारसहिओ नाणी कम्मं खयं नेइ ॥ १ ॥ जह अग्गिम्मि पबले खडपुलियं खिप्पमेव झामेइ । तह नाणीवि सकम्मं खवेइ उसासमित्तेणं ॥ २ ॥ न हु मरणम्मि उवग्गे सक्को बारसविहो सुयक्खंधो । सव्वो अणुचित्तेउं धंतं पि समत्थचित्तेणं ॥ ३ ॥ इक्कम्मि विजंमि पए संवेगं कुणइ वीयरगमए । वच्चइ नरो अविग्घं तं मरणं तेण मरितव्वं ॥ ४ ॥ इक्कमिवि० । सो तेण मोहजालं छिंदइ अज्झप्पओगेणं ॥ ५ ॥ जेण विरागो जायइ तं तं सव्वायरेण करणिज्जं । मुच्चइ हु ससंवेगी अणंतओ होअसंवेगी ॥ ६ ॥ (प्र० धम्मं जिणपण्णत्तं सम्मत्तमिणं सहहामि तिविहेणं । तसथावरभूयहियं पंथं निव्वाणमग्गस्स ॥ १ ॥) समणोऽहंतिअ पढमं बीयं सव्वत्थ संजओमिति । सव्वं च वोसिरामी जिणेहिं जं जं च पडिक्कुट्टं ॥ ७ ॥ मणसाऽविचित्तिणिज्जं सव्वं भासाइऽभासणिज्जं च । काएण अ अकरणिज्जं वोसिरि तिविहेण सावज्जं ॥ ८ ॥ अस्संजमवोसिरणं उवहिविवेगो तहा उवसमो अ । पडिरूवजोगविरिओ खंतो मुत्तो विवेगो अ ॥ ९ ॥ एयं पच्चक्खाणं आउरजण आवईसु भावेणं । अन्नतरं पडिवन्नो जंपंतो पावइ समाहिं ॥ ३०० ॥ मम मंगलमरिहंता सिद्धा साहु सुयं च धम्मो य । तेसिं सरणोवगओ सावज्जं वोसिरामिति ॥ १ ॥ इति सिरिमरणविभत्तिसुए संलेहणासुयं समत्तं १ ॥ अथ आराहणासुयं-सिद्धे उवसंपन्नो अरिहंते केवली अ भावेण । इत्तो एगतरेणवि पएण आराहओ होइ ॥ २ ॥ समुइन्नवेयणो पुण समणो हिययम्मि किं निवेसिज्जा ? । आलंबणं च काइं काऊण मुणी दुहं सहइ ? ॥ ३ ॥ नरएसु अणुत्तरेसु अ अणुत्तरा वेयणाओ पत्ताओ । वट्ठेण पमाए ताओवि अणंतसो पत्ता ॥ ४ ॥ एयं सयं कयं मे रिणं व कम्मं पुरा असायं तु । तमहं एस धुणामी मणम्मि सत्तं निवेसिज्जा ॥ ५ ॥ नाणा-विहदुक्खेहि य समुइन्नेहि उ सम्म सहणिज्जं । न य जीवो उ अजीवो कयपुव्वो वेयणाईहिं ॥ ६ ॥ अब्भुज्जयं विहारं इत्थं जिणदेसियं विउपसत्थं । नाउं महापुरिससेविय जं अब्भुज्जयं मरणं ॥ ७ ॥ ज(अ)ह पच्छिमम्मि काले पच्छिमत्तिथयरदेसियमुयारं । पच्छानिच्छयपत्थं उवेइ अब्भुज्जयं मरणं ॥ ८ ॥ छत्तीसमट्ठि(मंडि)याहि य कडजोगी जोगसंगहबलेणं । उज्जमिऊणं बारसविहेण तवनियमठाणेणं ॥ ९ ॥ संसारंगमज्झे धिइबलसन्नद्वबद्धकच्छाओ । हंतूण मोहमल्लं हराहि आराहणपडागं ॥ ३१० ॥ पोराणयं च कम्मं खवेइ अन्नन्नबंधणायायं । कम्म-कलंकलवलिं छिंदइ संथारमारूढो ॥ १ ॥ धीरपुरिसेहिं कहियं सप्पुरिसनिसेवियं परमघोरं । उत्तिण्णोमि हु रंगं हरामि आराहणपडागं ॥ २ ॥ धीर ! पडागाहरणं करेहि जह तंसि देसकालम्मि । सुत्तत्थमणुगुणितो धिइनिबलबद्धकच्छाओ ॥ ३ ॥ चत्तारि कसाए तिन्नि गारवे पंच इंदियग्गामे । जिणिउं परीसहसहे हराहि आराहणपडागं ॥ ४ ॥ न य मणसा चिंतिज्जा जीवामि चिरं मरामि व लहुंति । जइ इच्छसि तरिउं जे संसारमहोअहिमपारं ॥ ५ ॥ जइ इच्छसि नीसरिउं सब्बेसिं चेव पावकम्माणं । जिणवयणनाणदंसणचरित्तभावुज्जुओ जग्ग ॥ ६ ॥ दंसणनाणचरित्ते तवे य आराहणा चउक्खंधा । सा चेव होइ तिविहा उक्कोसा मज्झिम जहण्णा ॥ ७ ॥ आराहेऊण विऊ उक्कोसाराहणं चउक्खंधं । कम्मरयविप्पमुक्को तेणेव भवेण सिज्झिज्जा ॥ ८ ॥ आराहेऊण विऊ मज्झिमआराहणं चउक्खंधं । उक्कोसेण य चउरो भवे उ गंतूण सिज्झिज्जा ॥ ९ ॥ आराहेऊण विऊ जहन्नमाराहणं चउक्खंधं । सत्तट्ठ भवग्गहणे परिणामेऊण सिज्झिज्जा ॥ ३२० ॥ धीरेणवि मरियबं काउरिसेणवि अवस्स मरियबं । तम्हा अवस्समरणे वरं खु धीरत्तणे मरिउं ॥ १ ॥ एयं पच्चक्खाणं अणुपालेऊण सुविहिओ सम्मं । वेमाणिओ व देवो हविज्ज अहवावि सिज्झिज्जा ॥ २ ॥ एसो सवियारकओ उवक्कमो उत्तमट्ठकालम्मि । इत्तो उ पुणो वुच्छं जो उ कमो होइ अवियारे ॥ ३ ॥ साहु कयसंलेहो विजियपरीसहकसायसंताणो । निजवए मग्गिज्जा सुयरयणस(र)हस्सनिम्माए ॥ ४ ॥ पंचसमिए तिगुत्ते अणिस्सिए रागदोसमयरहिए । कडजोगी कालणू नाणचरणदंसणसमिद्धे ॥ ५ ॥ मरण-समाहीकुसले इंगियपत्थियसभाववेत्तारे । ववहारविहिविहिणू अब्भुज्जयमरणसारहिणो ॥ ६ ॥ उवएसहेउकारणगुणनिस(ढा)णायकारणविहणू । विण्णाणनाणकरणोवयारसुयधारण-

समत्थे ॥ ७ ॥ एगंतगुणे रहिया बुद्धीइ चउबिहाइ उववेया । छंदणू पवइया पच्चक्खाणंमि य विहणू ॥ ८ ॥ दुण्हं आयरियाणं दो वेयावच्चकरणनिज्जुत्ता । पाणगवेयावच्चे तवस्सिणो वत्ति दो पत्ता ॥ ९ ॥ उवत्तण परिवत्तण उच्चारुस्सास(व)करणजोगेसुं । दो वायगत्ति णज्जा असुत्तकरणे जहणेणं ॥ ३३० ॥ असइह वेयणाए पायच्छित्ते पडिक्कमणए य । जोगायकहा-जोगे पच्चक्खाणे य आयरिओ ॥ १ ॥ कप्पाकप्पविहिन्नु दुवालसंगसुयसारही(सव्वं) । छत्तीसगुणोवेया पच्छित्तविया(सा)रया धीरा ॥ २ ॥ एए ते निज्जवया परिकहिया अट्ट उत्तमट्टम्मि । जेसिं गुणसंखाणं न समत्था पायया वुत्तुं ॥ ३ ॥ एरिसयाण सगासे सूरिणं पवयणप्पवाईणं । पडिवज्जिज महत्थं समणो अब्भुज्जयं मरणं ॥ ४ ॥ आयरियउवज्झाए सीसे साहम्मिए कुलगणे अ । जे मे किया कसाया (जंमि कसाओ कोइवि प्र०) सब्बे तिविहेण खामेमि ॥ ५ ॥ सब्बस्स समणसंघस्स भगवओ अंजलिं करे सीसे । सब्बं स्वमावइत्ता स्वमामि सब्बस्स अहयंपि (स्व-मिज्ज सव्वस्सवि सयंमि प्र०) ॥ ६ ॥ गरहित्ता अप्पाणं अपुणक्कारं पडिक्कमित्ताण । नाणम्मि दंसणम्मि अ चरित्तजोगाइयारे अ ॥ ७ ॥ तो सीलगुणसमग्गो अणुवहयक्खो बलं च थामं च । विहरिज्ज तवसमग्गो अनियाणो आगमसहाओ ॥ ८ ॥ तवसोसियंगमंगो संधिसिराजालपागडसरीरो । किच्छाहियपरिहत्थो परिहरइ कलेवरं जाहे ॥ ९ ॥ पच्चक्खाइ अ ताहे अन्न-न्नसमाहिपत्तियंमिन्ती । तिविहेणाहारविहिं दियसुग्गइकायपगईए ॥ ३४० ॥ इहलोए परलोए निरासओ जीविए अ मरणे अ । सायाणुभवे भोगे जस्स अ अवहट्ठणाइए ॥ १ ॥ निम्म-मनिरहंकारो निरासयोऽकिंचणो अपडिक्कम्मो । वोसट्ठविसट्ठंगो चत्तचियत्तेण देहेणं ॥ २ ॥ तिविहेणवि सहमाणो परीसहे दूसहे अ उवसग्गे । विहरिज्ज विसयतण्हारयमलमसुभं विहु-णमाणो ॥ ३ ॥ नेहक्खएव दीवो जह खयमुवणेइ दीववट्ठिम्मि (ट्ठिपि) । खीणाहारसिणेहो सरीरवट्ठिं तह खवेइ ॥ ४ ॥ एव परज्झा असई परक्कमे पुव्वभणियसूरीणं । पासम्मि उत्तमट्ठे कुज्जा तो एस परिकम्मं ॥ ५ ॥ आगरसमुट्ठियं तह अज्झुसिरवागतणपत्तकडए य । कट्टसिह्लाफलंगंमिव अणभिज्जय निप्पकप्पंमि ॥ ६ ॥ निस्संधिणा तर्णंमिव सुहपडिलेहेण जइपस-त्थेणं । संथारो कायवो उत्तरपुव्वस्सिरो वावि ॥ ७ ॥ दोसुत्थ अप्पमाणे अंधकारे समम्मि अ णिसिट्ठे । निरुवहयम्मि गुणमणे वणम्मि गुत्ते (घणंनिगुत्ते) य संथारो ॥ ८ ॥ जुत्ते पमाण-रइओ उभओकालपडिलेहणासुद्धो । विहिविहिओ संथारो आरुहियवो तिगुत्तेणं ॥ ९ ॥ आरुहियचरित्तभरो अन्नेसु उ परमगुरुस्सगासम्मि । दब्बेसु पज्जवेसु य खित्ते काले य सब्बंमि ॥ ३५० ॥ एएसु चेव ठाणेसु चउसु सब्बो चउबिहाहारो । तवसंजमुत्ति किच्चा वोसिरियवो तिगुत्तेणं ॥ १ ॥ अहवा समाहिहेउं कायवो पाणगस्स आहारो । तो पाणगंमि पच्छा वोसि-रियव्वं जहाकाले ॥ २ ॥ निसिरित्ता अप्पाणं सव्वगुणसमन्नियम्मि निज्जवए । संथारगसंनिविट्ठो अनियाणो चेव विहरिज्जा ॥ ३ ॥ इहलोए परलोए अनियाणो जीविए य मरणे य । वासीचंदणकप्पो समो य माणावमाणेसु ॥ ४ ॥ अह महुरं फुडवियडं तहप्पसायकरणिज्जविसयकयं । इज्ज कहं निज्जवओ सुईमन्नाहरणहेउं ॥ ५ ॥ इहलोए परलोए नाणचरणदंस-णंमि य अवायं । दंसेइ नियाणम्मि य मायामिच्छत्तसल्लेणं ॥ ६ ॥ बालमरणे अवायं तह य उवायं अबालमरणम्मि । उस्सासरज्जुवेहाणसे य तह गिद्धपट्ठे य ॥ ७ ॥ जह य अणुद्धु-यसल्लो ससल्लमरणेण कइ मरेऊणं । दंसणनाणविहूणो मरेति असमाहिमरणेणं ॥ ८ ॥ जह सायरसे गिद्धा इत्थिअहंकारपावसुयमत्ता । ओसन्नबालमरणा भमंति संसारकंतारं ॥ ९ ॥ अह मिच्छत्त ससल्लो मायासल्लेण जह ससल्लो य । जह य नियाण ससल्लो मरंति असमाहिमरणेणं ॥ ३६० ॥ जह वेयणावसट्ठा मरंति जह केइ इंदियवसट्ठा । जह य कसायवसट्ठा मरंति असमाहिमरणेणं ॥ १ ॥ जह सिद्धमग्गदुग्गइ(ह)सग्गगलमोडणाणि मरणाणि । मरिऊण केइ सिद्धिं उर्विति सुसमाहिमरणेणं ॥ २ ॥ एवं बहुप्पयारं तु अवायं उत्तमट्ठकालम्मि । दंसंति अवायणू सल्लुद्धरणे सुविहियाणं ॥ ३ ॥ दिति य सिं उवएसं गुरुणो नाणाविहेहिं हेऊहिं । जेण सुगई भयंतो संसारभयदुओ (दुओ) होइ ॥ ४ ॥ न हु तेसु वेयणं खलु अहो चिरम्मि-त्ति दारुणं दुक्खं । सहणिज्जं देहेणं मणसा एवं विचित्तिज्जा ॥ ५ ॥ सागरतरणत्थमई इयस्स पोयस्स जए (उज्जवे) धूवे । जो रज्जु (रक्ख) मुक्खकालो न सो विलंबत्ति कायवो ॥ ६ ॥ तिह्विहूणो दीवो न चिरं दिप्पइ जगम्मि पच्चक्खं । न य जलरहिओ मच्छो जिअइ चिरं नेव पउमाई ॥ ७ ॥ अन्नं इमं सरीरं अन्नोऽहं इय मणम्मि ठाविज्जा । जं सुचिरेणऽवि मोच्चं देहे को तत्थ पडिबंधो ? ॥ ८ ॥ दूरत्थंपि विणासं अवस्सभावं उवट्ठियं जाण । जो अह वट्ठइ कालो अणागओ इत्थ आसिण्हा ॥ ९ ॥ जं सुचिरेणवि होहिइ अणावसं तंमि को ममीकारो ? । देहे निस्संदेहे पिएवि सुयणत्तणं नत्थि ॥ ३७० ॥ उवलद्धो सिद्धिपहो न य अणुचिण्णा पमायदोसेणं । हा जीव ! अप्पवेरिय ! न हु ते एयं न तिप्पिहिइ ॥ १ ॥ नत्थि य ते संघयणं घोरा य परीसहा अहे निरया । संसारो य असारो अइप्पमाओ य तं जीव ! ॥ २ ॥ कोहाइकसाया खलु बीयं संसारमेरवदुहाणं । तेसु पमत्तेसु सया कत्तो सुक्खो य मुक्खो वा ? ॥ ३ ॥ जाओ परव्वसेणं संसारे वेयणाओ घोराओ । पत्ताओ नारगत्ते अहुणा ताओ विचित्तिज्जा ॥ ४ ॥ इण्हिं सयं वसिस्स उ निरुवमसुक्खावसाणमुहदूरं (कडूरं) । कल्लाणमोसहं पिब परिणामसुहं न तं दुक्खं ॥ ५ ॥ संबंधि बंधवेसु अ न अ अणुराओ खणंपि कायव्वो । तेच्चिय हुंति अमित्ता जह जणणी वंमदत्तस्स ॥ ६ ॥ वसिऊण व सहिमज्झे वच्चइ एगाणिओ इमो जीवो ।

मोत्तूण सरीरघरं जह कण्हो मरणकालम्भि ॥ ७ ॥ इण्हि व मुहुत्तेण गोसे व सुए व अद्वरत्ते वा । जस्स न नज्जइ वेला कद्विसं गच्छिई जीवो ? ॥ ८ ॥ एवमणुचितयंतो भावणुभावा-
 णुरत्त सियलेसो । तद्विस मरिउकामो व होइ झाणम्मि उज्जुत्तो ॥ ९ ॥ नरगतिरिक्खगईसु अ माणुसदेवत्तणे वसंतेणं । जं सुहदुक्खं पत्तं तं अणुचितिज्ज संथारे ॥ ३८० ॥ नरएसु वेय-
 णाओ अणोवमा सीयउण्हवेरा(गा)ओ । कायनिमित्तं पत्ता अणंतखुत्तो बहुविहाओ ॥ १ ॥ देवत्ते माणुसत्ते पराहिओमत्तणं उवगएणं । दुक्खपरिक्केसविही अणंतखुत्तो समणुभूया ॥ २ ॥
 भिच्चिंदियपंचिंदियतिरिक्खकायम्मि णेगसंठाणं । जम्मणमरणऽरहद्वे अणंतखुत्तो गओ जीवो ॥ ३ ॥ सुविहिय ! अईयकाले अणंतकाएसु तेण जीवेणं । जम्मणमरणमणंतं बहुभवगहणं
 समणुभूयं ॥ ४ ॥ घोरम्मि गब्भवासे कलमलजंबालअसुइबीभच्छे । वसिओ अणंतखुत्तो जीवो कम्माणुभावेणं ॥ ५ ॥ जोणीमुह निग्गच्छंतेणं संसारे इमे(रिमे)ण जीवेणं । रसियं अइबी-
 भच्छं कडीकडाहंतरगएणं ॥ ६ ॥ जं असियं बीभच्छं असुइघोरम्मि गब्भवासम्मि । तं चिंतिऊण सयं मुक्खम्मि मइं निवेसिज्जा ॥ ७ ॥ वसिऊण विमाणेसु य जीवो पसरंतमणिमऊ-
 हेसु । वसिओ पुणोवि सुच्चिय जोणिसहस्संधयारेसुं ॥ ८ ॥ वसिऊण देवलोए निच्चुजोए सयंपभे जीवो । वसइ जलवेगकलमलविउले वलयामुहे घोरे ॥ ९ ॥ वसिऊण सुरनरीसरचामी-
 यररिद्धिमणहरघरेसु । वसिओ नरग निरंतरभयभेरवपंजरे जीवो ॥ ३९० ॥ वसिऊण विचित्तेसु अ विमाणगणभवणसोभसिहरेसु । वसइ तिरिएसु गिरिगुहविवरमहाकंदरदरीसु ॥ १ ॥ भुत्तू-
 णवि भोगसुहं सुरनरखयरेसु पुण पमाएणं । पियइ नरएसु भेरवकलंततउतंबपाणाइं ॥ २ ॥ सोऊण मुइयणरवइभवे अ जयसइमंगलरवोघं । सुणइ नरएसु दुहपरअकंदुदामसदाइं ॥ ३ ॥
 निहण हण गिण्ह दह पय उब्बंध पबंध बंध रुद्धाहि । फाले लोले घोले थूरे खारेहि से गत्तं ॥ ४ ॥ वेयरणिखारकलिमलसल्लंकुसलउडकरकयकुलेसु । वसिओ नरएसु जीवो हणहणघणघो-
 रसदेसुं ॥ ५ ॥ तिरिएसु व भेरवसइपक्खणपरपक्खणच्छणसएसु । वसिओ उव्वियमाणो जीवो कुडिलम्मि संसारे ॥ ६ ॥ मणुयत्तणेवि बहुविहविणिवायसहस्सभेसणघणम्मि । भोगपि-
 वासाणुगओ वसिओ भय(व)पंजरे जीवो ॥ ७ ॥ वसियं दरीसु वसियं गिरीसु वसियं समुदमज्झेसु । रुक्खग्गेसु य वसियं संसारे संसरंतेणं ॥ ८ ॥ पीयं थणअच्छीरं सागरसलिलाओ बहुयरं
 हुज्जा । संसारम्मि अणंते माईणं अण्णमण्णणं ॥ ९ ॥ नयणोदगंपि तासिं सागरसलिलाओ बहुयरं हुज्जा । गलियं रुयमाणीणं माईणं अण्णमण्णणं ॥ ४०० ॥ नत्थि भयं मरणसमं जम्म-
 णसरिसं न विज्जाए दुक्खं । तम्हा जरमरणकरं छिंद ममत्तं सरीराओ ॥ १ ॥ अन्नं इमं सरीरं अण्णो जीवुत्ति निच्छियमईओ । दुक्खपरीकेसकरं छिंद ममत्तं सरीराओ ॥ २ ॥ जावइयं
 किंचि दुहं सरीरं माणसं च संसारे । प(ए)त्तो अणंतखुत्तो कायस्स ममत्तदोसेणं ॥ ३ ॥ तम्हा सरीरमाई अब्भितर बाहिरं निरवसेसं । छिंद ममत्तं सुविहिय ! जइ इच्छसि मुच्चिउ दुहाणं
 ॥ ४ ॥ सब्बे उवसग्ग परीसहे य तिविहेण निज्जिणाहि लहु । एएसु निज्जिएसुं होहिसि आराहओ मरणे ॥ ५ ॥ मा हु य सरीरसंताविओ य तं झाहि अद्वरुदाइं । सुट्ठु विरूवियलिंगेवि
 अद्वरुदाणि रूवंति ॥ ६ ॥ मित्तसुयबंधवाइसु इट्ठाणिट्ठेसु इंदियत्थेसुं । रागो वा दोसो वा ईसि मणेणं न कायवो ॥ ७ ॥ रोगायंकेसु पुणो विउलासु य वेयणासुइत्तासु । सम्मं अहियासंतो
 इणमो हियएण चिंतिज्जा ॥ ८ ॥ बहुपलियसागराइं स(सो)इट्ठाणि मे(मए)नरयतिरियजाईसुं । किं पुण सुहावसाणं इणमो सारं नरदुहंति ? ॥ ९ ॥ सोलस रोगायंका सहिया जह चक्किणा चउ-
 त्थेणं । वाससहस्सा सत्त उ सामण्णघरं उवगएणं ॥ ४१० ॥ तह उत्तमट्टकाले देहे निरवक्खयं उवगएणं । तिललित्तलावगा इव आयंका विसहियवा उ ॥ १ ॥ पारिवायगभत्तो राया पट्टीइ
 सेट्ठिणो मूढो । अच्चुण्हं परमन्नं दासी य सुकोवियमणुस्सा ॥ २ ॥ सा य सलिलुल्लोहियमंसवसापेसिथिग्गलं धित्तुं । उप्पइया पट्टीओ पाई जह रक्खसवहुव ॥ ३ ॥ तेण य निव्वेएणं
 निग्गंतूणं तु सुविहियसगासे । आरुहियचरित्तभरो सीहोरसियं समारूढो ॥ ४ ॥ तम्मि य महिहरसिहरे सिलायले निम्मले महाभागो । वोसिरइ थिरपइत्तो सब्बाहारं मह तणु य ॥ ५ ॥
 तिविहोवसग्ग सहिउं पडिमं सो अण्णमासियं धीरो । ठाइ य पुब्बाभिमुहो उत्तमधिइसत्तसंजुत्तो ॥ ६ ॥ सा य पगलंतलोहियमेयवसा मंसला परी (लं चरा) पट्टी । खज्जइ खगेहि दूसहनि-
 सट्टचंचुप्पहारेहिं ॥ ७ ॥ मसएहिं मच्छियाहि य कीडीहिवि मंससंपलग्गाहिं । खज्जंतोवि न कंपइ कम्मविवागं गणेमाणो ॥ ८ ॥ रत्तिं च पयइविहसियसियालियाहिं निरणुकंपाहिं । उव-
 सग्गिज्जइ धीरो नाणाविहरूवधारीहिं ॥ ९ ॥ चित्तेइ य खरकरवयअसिपंजरखग्गमुग्गरवहाओ । इणमो न हु कट्टयरं दुक्खं निरयग्गिदुक्खाओ ॥ ४२० ॥ एवं च गओ पक्खो बीओ
 पक्खो य दाहिणदिसाए । अवरेणवि पक्खोवि य समइकंतो महेसिस्स ॥ १ ॥ तह उत्तरेण पक्खं भगवं अविकंपमाणसो सहइ । पडिओ य दुमासंते नमोत्ति वोत्तुं जिणिंदाणं ॥ २ ॥
 कंचणपुरम्मि सिट्ठी जिणधम्मो नाम सावओ आसी । तस्स इमं चरियपयं तउ एयं कित्तिममुणिस्स ॥ ३ ॥ जह तेण वितथमुणिणा उवसग्गा परमदूसहा सहिया । तह उवसग्गा सुवि-
 हिय ! सहियवा उत्तमट्टमि ॥ ४ ॥ निप्फेडियाणि दुण्णिवि सीसावेढेण जस्स अच्छीणि । न य संजमाउ चलिओ मेअज्जो मंदरगिरिब ॥ ५ ॥ जो कुंचगावराहे पाणिदया कुंचगंपि नाइ-
 क्खे । जीवियमणपेहंतं मेयजरिसिं नमंसामि ॥ ६ ॥ जो तिहि पएहिं धम्मं समइगओ संजमे समारूढो । उवसमविवेगसंवर चिलाइपुत्तं नमंसामि ॥ ७ ॥ सोएहिं अइगयाओ लोहि-

यगंधेण जस्स कीडीओ । खायंति उत्तमंगं तं दुक्करकारयं वंदे ॥ ८ ॥ देहो पिपीलियाहिं चिलाइपुत्तस्स चालणिच्च कओ । तणुओवि मणपओसो न य जाओ तस्स ताणुवरिं ॥ ९ ॥ धीरो
 चिलाइपुत्तो मूङ्गलियाहिं चालिणिच्च कओ । न य धम्माओ चलिओ तं दुक्करकारयं वंदे ॥ १० ॥ गयसुकुमालमहेसी जह दड्ढो पिइवणंसि ससुरेणं । न य ॥ १ ॥ जह तेण सो हुयासो
 सम्मं अइरेगदूसहो सहिओ । तह सहियवो सुविहिय ! उवसग्गो देहदुक्खं च ॥ २ ॥ कमलामेलाहरणे सागरचंदो सुईहिं नभसेणं । आगंतूण सुरत्ता संपइ संपाइणो वारे ॥ ३ ॥ जा तस्स
 खमा तइया जो भावो जा य दुक्करा पडिमा । तं अणगार ! गुणागर तुमं पि हियएण चित्तेहि ॥ ४ ॥ सोऊण निसासमए नलिणिविमाणस्स वण्णणं धीरो । संभरियदेवलोओ उज्जेणि
 अवंतिसुकुमालो ॥ ५ ॥ धित्तूण समणदिक्खं नियमुज्झियसव्वदिब्वआहारो । बाहिं वंसकुडंगे पायवगमणं निवण्णो उ ॥ ६ ॥ वोसट्टनिसट्टंगो तहिं सो भुल्लुं कियाइ खइओ उ । मंदरगिरि-
 निकंपं तं दुक्करकारयं वंदे ॥ ७ ॥ मरणंमि जस्स मुक्कं सुकुसुमगंधोदयं च देवेहिं । अज्जवि गंधवई सा तं च कुडंगी सरट्ठाणं ॥ ८ ॥ जह तेण तत्थ मुणिणा सम्मं सुमणेण इंगिणी तिण्णा ।
 तह तूरह उत्तमट्टं तं च मणे सन्निवेसेह ॥ ९ ॥ जो निच्छएण गिण्हइ देहचाएवि न अट्ठियं (द्विइं) कुणइ । सो साहेइ सकज्जं जह चंदवडिंसओ राया ॥ १० ॥ दीवाभिग्गहधारी दू-
 हघणविणयनिच्चलनगिंदो । जह सो तिण्णपइण्णो तह तूरह तुमं पइन्नंमि ॥ १ ॥ जह दमदंतमहेसी पंडयकोरव मुणी थुयगरहिओ । आसि समो दुण्हंपि हु एव समा होइ सब्बत्थ ॥ २ ॥
 जह खंदगसीसेहिं सुक्कमहाझाणसंसियमणेहिं । न कओ मणप्पओसो पीलिज्जंतेसु जंतंमि ॥ ३ ॥ तह धन्नसालिभद्दा अणगारा दोवि तधमहिइढीया । वेभारगिरिसमीवे नालंदाए समी-
 वंमि ॥ ४ ॥ जुअलसिलासंधारे पायवगमणं उवागया जुगवं । मासं अणूणगं ते वोसट्टनिसट्टसव्वंगा ॥ ५ ॥ सीयायवझडियंगा लग्गुद्वियमंसण्हारुणि विणट्ठा । दोवि अणुत्तरवासी महेसिणो
 रिद्धिसंपण्णा ॥ ६ ॥ अच्छेरयं च लोए ताण तहिं देवयाणुभावेणं । अज्जवि अट्ठिनिवेसं पंकिव्व सनामगा हत्थी ॥ ७ ॥ जह ते समंसचम्मे दुबलविलग्गेवि णो सयं चलिया । तह अहिया-
 सेयव्वं गमणे थेवंपिमं दुक्खं ॥ ८ ॥ अयलग्गाम कुडुंबिय सुरइपसयदेवसुमणयसुभद्दा । सब्बे उ गया खमगं गिरिगुहनिलयं नियच्छीय ॥ ९ ॥ ते तं तवोकिलंतं वीसामेऊण विणयपुव्वगं ।
 उवलद्वपुण्णपावा फासुयसुम(मुस)हं करेसीह ॥ १० ॥ सुगहियसावयधम्मा जिणमहिमाणेसु जणियसोहग्गा । जसहरमुणिणो पासे निक्खंता तिब्वसंवेगा ॥ १ ॥ सुगिहियजिणवयणामयप-
 रिपुट्ठा सीलसुरहिगंधद्वद्दा । विहरिय गुरुस्सगासे जिणवस्वासुपुज्जतित्थंसि ॥ २ ॥ कणगावलिमुत्तावलिरयणावलिहीकीलियकलंता । काही य ससंवेगा आयंबिलवड्ढमाणं च ॥ ३ ॥ ओस-
 रिया य मणोहरसिहरंतरसंचरंतपुक्खवरयं । आइकरचलणपंकयसिरसेवियमालहिमवंतं ॥ ४ ॥ रमणिज्जहरतरुवरपरहुअसिहिभमरमहुयरिविलोले । अमरगिरिविसयमणहरजिणवयणसुका-
 णणुहेसे ॥ ५ ॥ तंमि सिलायल पुहवी पंचवि देहट्ठिईसु मुणियत्था । कालगया उववण्णा पंचवि अपराजियविमाणे ॥ ६ ॥ ताओ चइऊण इहं भारहवासे असेसरिउदमणा । पंडुनराहिवत्त-
 णया जाया जयलच्छिभत्तारा ॥ ७ ॥ ते कण्हमरणदूसहदुक्खसमुप्पन्नतिब्वसंवेगा । सुट्ठियथेरसगासे निक्खंता खायकित्तीया ॥ ८ ॥ जिट्ठो चउदसपुव्वी चउरो इक्कारसंगवी आसी । विह-
 रिय गुरुस्सगासे जसपडहभरंतजियलोया ॥ ९ ॥ ते विहरिऊण विहिणा नवरि सुरट्टं कमेण संपत्ता । सोउं जिणनिव्वाणं भत्तपरिन्नं करेसीय ॥ १० ॥ घोराभिग्गहधारी भीमो कुंतग्ग-
 हियभिक्षाओ । सत्तुंजयसेलसिहरे पाओवगओ गयभवोघो ॥ १ ॥ पुव्वविराहियवंतरउवसग्गसहस्समारुयनगिंदो । अविकंपो आसि मुणी भाईणं इक्कपासम्मि ॥ २ ॥ दो मासे संपुण्णे
 सम्मं धिइधणियबद्धकच्छाओ । ताव उवसग्गिओ सो जाव उ परिनिब्वओ भगवं ॥ ३ ॥ सेसावि पडुपु ण पाओवगया उ निब्वया सब्बे । एवं धिइसंपन्ना अण्णेवि दुहाओ मुच्चंति ॥ ४ ॥
 दंडोविय अणगारो आयावणभूमिसंठिओ वीरो । सहिऊण बाणघायं सम्मं परिनिब्वओ भगवं ॥ ५ ॥ सेलम्मि चित्तकूडे सुकोसलो सुट्ठिओ उ पडिमाए । नियजणणीए खइओ वग्घी-
 भावं उवगयाए ॥ ६ ॥ पडिमाय गओ अ मुणी लंबं सुठिओ बहूसु ठाणेसुं । तहवि य अकलुसभावो सा हु खमा सब्बसाहूणं ॥ ७ ॥ पंचसयापरिवुडया वइररिस्सी पव्वए रहावत्ते । मुत्तूण
 खुइडगं किर अन्नं गिरिमस्सिओ सुजसो ॥ ८ ॥ तत्थ य सो उवलतले एगागी धीरनिच्छयमईओ । वोसिरिऊण सरीरं उण्हम्मि ठिओ वियप्पा(विगयपा)णो ॥ ९ ॥ ता सो अइसुकुमालो दिणयर-
 किरणगितावियसरीरो । हविपिंडुव्व विलीणो उववण्णो देवलोयम्मि ॥ १० ॥ तस्स य सरीरपूयं कासीय रहेहि लोगपाला उ । तेण रहावत्तगिरी अज्जवि सो विस्सुओ लोए ॥ १ ॥ भग-
 वंपि वइरसामी बिइयगिरीदेवयाइ कयपूओ । संपूइओऽत्थ मरणे कुंजरभरिएण सक्केणं ॥ २ ॥ पूइयसुविहियदेहो पयाहिणं कुंजरेण तं सेलं । कासीय सुरवरिंदो तम्हा सो कुंजरावत्तो ॥ ३ ॥
 तत्तो य जोगसंगहउवहाणक्खाणयम्मि कोसंबी । रोहगमवंतिसेणो रुज्झेइ मणिप्पभो भासो(ऽब्भासं) ॥ ४ ॥ धम्मगसुसीसजुयलं धम्मजसे तत्थ रण्णदेसम्मि । भत्तं पच्चक्खाइय सेल-
 म्मि उ वच्छगातीरे ॥ ५ ॥ निम्ममनिरहंकारो एगागी सेलकंदरसिलाए । कासीय उत्तमट्टं सो भावो सब्बसाहूणं ॥ ६ ॥ उण्हम्मि सिलावट्टे जह तं अरहण्णएण सुकुमालं । विग्घारियं
 सरीरं अणुचित्तिजा तमुच्छाहं ॥ ७ ॥ गुब्बर पाओवगओ सुबुद्धिणा णिग्घिणेण चाणक्को । दड्ढो न य संचलिओ सा हु धिई चित्तिणिज्जा उ ॥ ८ ॥ जह सोऽवि संप्पएसी वोसट्टनिसिट्ट-
 चत्तदेहो उ । वंसीपत्तेहिं विनिग्गएहिं आगासमुक्खित्तो ॥ ९ ॥ जह सा बत्तीसघडा वोसट्टनिसिट्टचत्तदेहागा । धीरावाएण उ दीवएणवि गलिम्मि ओलइया ॥ १० ॥ जंतेण (२३६)

करकएण व सत्येहिं व सावएहिं विविहेहिं । देहे विदस्संते ईसिंपि अकप्पणारु(झ)मणा ॥ १ ॥ पडिणीययाइ केसिं चम्मंसे खीलएहिं निहणित्ता । महुघयमक्खियदेहे पिवीलियाणं तु
 दिज्जाहि ॥ २ ॥ जेण विरागो जायइ तं तं सबायरेण करणिजं । सुवइ हु ससंवेगो इत्थ इलापुत्तदिट्ठंतो ॥ ३ ॥ समुइण्णेषु य सुविहिय ! घोरेसु परीसहेसु सहणेणं । सो अत्थो सरणिजो
 जोऽधीओ उत्तरज्झयणे ॥ ४ ॥ उज्जेणि हत्थिमित्तो सत्थसमग्गो वणम्मि कट्टेणं । पायहरो संवरणं चिल्लग भिक्खा वण सुरेसुं ॥ ५ ॥ तत्थेव य धणमित्तो चेत्थगमरणं नईइ तण्हाए ।
 निच्छिण्णेषुऽणजंत बिट्ठियविस्सारणं कासी ॥ ६ ॥ मुणिचंदेण विदिण्णस्स रायगिहि परीसहो महाघोरो । जत्तो हरिवंसविहसणस्स वुच्चं जिणिंदस्स ॥ ७ ॥ रायगिहनिग्गया खलु
 पडिमापडिवन्नगा मुणी चउरो । सीयविहूय कमेणं पहरे पहरे गया सिद्धिं ॥ ८ ॥ उसिणे तगरऽरहन्नग चंपा मसएसु सुमणभहरिती । खमसमण अजरक्खिय अचेत्थयत्ते अ उज्जेणी
 ॥ ९ ॥ अरईय जाइसूकरो (मूओ) भवो अ दुलहबोहीओ । कोसंबीए कहिओ इत्थीए थूलभहरिती ॥ १० ॥ कुल्लइरम्मि अ दत्तो चरियाइ परीसहे समक्खाओ । सिट्ठिसुयतिगिच्छणं
 अंगुलीवो य वासम्मि ॥ १ ॥ गयपुर कुरुदत्तसुओ निसीहिया अडविदेस पडिमाए । गाविकुविएण दइढो गयसुकुमालो जहा भगवं ॥ २ ॥ तो(दो) अणगारा धिज्जाइयाइ कोसंबि सो-
 मदत्ताई । पाओवगया णदिणेसिज्जाए सागरे छूटा ॥ ३ ॥ महुराइ महुखमओ अक्कोसपरीसहे उ सविसेसो । बीओ रायगिहम्मि उ अज्जुणमालारदिट्ठंतो ॥ ४ ॥ कुंभारकडे नगरे खंदग-
 सीसाण जंतपीलणया । एवंविहे कहिज्जइ जह सहियं तस्स सीसेहिं ॥ ५ ॥ तह झाणनाणवु(जु)त्तं गीए संठि(पट्ठि)यस्स समुयाणं । तत्तो अलाभगंमि उ जह कोहं निज्जिणे कण्हो ॥ ६ ॥
 किसिपारासरढंढो बीयं तु अलाभगे उदाहरणं । कण्हबलभदमन्नं चइऊण खमन्निओ सिद्धो ॥ ७ ॥ महुरा जियसत्तुसुओ अणगारो कालवेसिओ रोगे । मोग्गहत्तेलसिहरे खइओ किल
 सुरसियालेणं ॥ ८ ॥ सावत्थी जियसत्तुतणओ निक्खमण पडिम तणफासे । वीरिय (वेरज्ज) पविय विक्किंचण कुसलेसण कइढणा सहणं ॥ ९ ॥ चंपा सुणंदगं चिय साहुदुगुंछाइ जल्लख-
 उरंगे । कोसंबि जम्म निक्खमण वेयणं साहुपडिमाए ॥ १० ॥ महुराइ इंददत्तोऽसक्कारा पायछेयणे सइढो । पन्नाइ अज्जकालग सागरखमणो य दिट्ठंतो ॥ १ ॥ नाणे असगडताओ
 खंभगनिधी अणहियासणे भवो । दंसणपरीसहम्मि उ आसाढभूई उ आयरिया ॥ २ ॥ चरियाए मरणम्मि उ समुइण्णपरीसहो मुणी एवं । भाविज्ज निउणजिणमयउवएससुईइ अप्पाणं
 ॥ ३ ॥ उम्मग्गसंपयायं मणहत्थिं विसयसुमरियमणंतं । नाणकुसेण धीरो धरेइ दित्तंपिव गइंदं ॥ ४ ॥ एए उ महासूरा महिडिढए को व भाणिउं सत्तो ? । किं वातियमुवमाए जिणगण-
 धरथेरचरिएसुं ॥ ५ ॥ किं चित्तं जइ नाणी सम्मदिट्ठी करंति उच्छाहं । तिरिएहिवि दुरणुचरो केहिवि अणुपालिओ धम्मो ॥ ६ ॥ अरुणसिहं दट्ठूणं मच्छो सणी महासमुद्धम्मि । हा
 ण गंहिउत्ति काले झस(ड)त्ति संवेगमावण्णो ॥ ७ ॥ अप्पाणं निंदंतो उत्तरिऊणं महन्नवजलाओ । सावज्जजोगविरओ भत्तपरिणं करेसीय ॥ ८ ॥ खगतुंडभिन्नदेहो दूसहसूरगितावियसरीरो ।
 कालं काऊण सुरो उववन्नो एव सहणिजं ॥ ९ ॥ सो वानरजूहवई कंतारे सुविहियाणुकंपाए । भासुरवरबुंदिधरो देवो वेमाणिओ जाओ ॥ १० ॥ तं सीहसेणगयवरचरियं सोऊण दुक्करं
 रण्णे । को हु णु तवे पमायं करेज्ज जाओ मणुस्सेसुं ? ॥ १ ॥ भुयगपुरोहियडक्को राया मरिऊण सल्लइवणम्मि । सुपसत्थगंधहत्थी बहुभयगयभेलणो जाओ ॥ २ ॥ सो सीहचंदमुणिवरप-
 डिमापडिबोहिओ सुसंवेगो । पाणवहालियचोरियअब्बंभपरिग्गहनियत्तो ॥ ३ ॥ रागदोसनियत्तो छट्ठक्खमणस्स पारणे ताहे । आससिऊणं पंडं आयवतत्तं जलं पासी ॥ ४ ॥ खमगत्तण-
 निम्मंसो धमणिसिरोजालसंतयसरीरो । विहरिय अप्पप्पाणो मुणिउवएसं विचिंदंतो ॥ ५ ॥ सो अन्नया णिदाहे पंकोसन्नो वणं निरुत्थारो । चिरवेरिएण दट्ठो कुक्कुडसप्पेण घोरेणं ॥ ६ ॥
 जिणवयणमणुगुणितो ताहे सव्वं चउबिहाहारं । वोसिरिऊण गइंदो भावेण जिणे नमंसीय ॥ ७ ॥ तत्थ य वणयरसुरवरविम्हियकीरंतपूयसक्कारो । मज्झत्थो आसी किर कलहेसु य जज्ज-
 रिजंतो ॥ ८ ॥ सम्मं सहिऊण तओ कालगओ सत्तमंमि कप्पम्मि । सिरितिलयम्मि विमाणे उक्कोसठिई सुरो जाओ ॥ ९ ॥ सुयदिट्ठिवायकहियं एयं अक्खाणयं निसामित्ता । पंडियम-
 रणम्मि मइं दंढं निवसिज्ज भावेणं ॥ १० ॥ जिणवयणमणुस्सट्ठा दोवि भुयंगा महाविसा घोरा । कासीय कोसिया सयतणूसु भत्तं मुइंगाणं ॥ १ ॥ एगो विमाणवासी जाओ वरवज्जपं-
 जरसरीरो । बीओ उ नंदणकुले बलुत्ति जक्खो महिडिढओ ॥ २ ॥ हिमचूलसुरूपत्ती भद्गमहिती य थूलभदो य । वेरोवसमे कहणो सुरभावे दंसणे खमणो ॥ ३ ॥ बावीसमाणुपुब्बिं
 तिरिक्खमणुयावि भेसणट्ठाए । विसयाणुकंपरक्खण करेज्ज देवा उ उवसगं ॥ ४ ॥ संघयणधिईजुत्तो नवदसपुब्बी सुएण अंगा वा । इंगिणि पाओवगमं पडिवज्जइ एरिसो साहू ॥ ५ ॥
 निच्चल निप्पडिकम्मो निक्खिवए जं जहिं जहा अंगं । एयं पाओवगमं सनिहारिं वा अनीहारिं ॥ ६ ॥ पाओवगमं भणियं समविसमे पायवुव्व जह पडिओ । नवरं परप्पओगा कंपिज्ज
 जहा फलतरुव्व ॥ ७ ॥ तसपाणबीयरहिए विच्छिण्णवियारथंडिलविसुद्धे । एगंते निहोसे उविति अब्भुज्जयं मरणं ॥ ८ ॥ पुव्वभवियवेरेणं देवो साहरइ कोऽवि पायाले । मा सो चरिमसरीरो
 न वेअणं किंचि पाविज्जा ॥ ९ ॥ उप्पन्ने उवसग्गे दिव्वे माणुस्सए तिरिक्खे अ । सब्बे पराजिणित्ता पाओवगया पविहरंति ॥ १० ॥ जह नाम असी कोसा अन्नो कोसो असीइ खलु
 १४५ मरणसमाधिप्रकीर्णकं, ७१६७ - ४८१ - ५३१

अन्नो । इय मे अन्नो जीवो अन्नो देहुत्ति मन्निजा ॥ १ ॥ पुत्रावरदाहिणउत्तरेण वाएहिं आवडंतेहि । जह नवि कंपइ मेरू तह झाणाओ नवि चलंति ॥ २ ॥ पढमम्मि य संघयणे वटंते
 सेलकुड्डसामाणे । तेसिंपिय वुच्छेओ चउदसपुत्रीण वुच्छेए ॥ ३ ॥ पुढविदगअगणिमारुयतरुमाइ तसेसु कोइ साहरइ । वोसट्टचत्तदेहो अहाउअं तं परि(डि)क्खिज्जा ॥ ४ ॥ देवो नेहेण णए
 देवागमणं च इंदगमणं वा । जहियं इड्ढी कंता सबसुहा हुंति सुहभावा ॥ ५ ॥ उवसग्गे तिविहेविय अणुकूले चेव तह य पडिकूले । सम्मं अहियासंतो कम्मक्खयकारओ होइ ॥ ६ ॥
 एवं पाओवगमं इंगिणि पडिकम्म वण्णियं सुत्ते । तित्थयरगणहरेहि य साहूहि य सेवियमुयारं ॥ ७ ॥ सबे सबद्धाए सब्बू सब्बकम्मभूमीसु । सब्बगुरू सब्बहिया सबे मेरूसु अहिसित्ता
 ॥ ८ ॥ सब्बाहिवि लद्धीहिं सबेऽवि परीसहे पराइत्ता । सबेऽविय तित्थयरा पाओवगया उ सिद्धिगया ॥ ९ ॥ अवसेसा अणगारा तीयपडुप्पन्नऽणागया सबे । केई पाओवगया पच्चक्खाणि-
 गिणिं केई ॥ ५४० ॥ सब्बावि अ अज्जाओ सबेऽवि य पढमसंघयणवज्जा । सबे य देसविरया पच्चक्खाणेण य मरंति ॥ १ ॥ सब्बसुहप्पभवाओ जीवियसाराओ सब्बजणिगाओ । आहाराओ
 रयणं न विज्जए उत्तमं लोए ॥ २ ॥ विग्गहगए य सिद्धे मुत्तुं लोगम्मि जे मिया जीवा । सबे सब्बावत्थं आहारे हुंति आउत्ता ॥ ३ ॥ तं तारिसगं रयणं सारं जं सब्बलोयरयणाणं । सब्बं परि-
 च्छइत्ता पाओवगया परि(वि)हरंति ॥ ४ ॥ एयं पाओवगमं निप्पडिकम्मं जिणेहिं पन्नत्तं । तं सोऊणं खमओ ववसायपरक्कमं कुणइ ॥ ५ ॥ धीरपुरिसपण्णत्ते सप्पुरिसनिसेविए परमरम्मि ।
 धण्णा सिलायलगया निरावयक्खा णिवज्जंति ॥ ६ ॥ सुव्रंति य अणगारा घोरासु भयाणियासु अडवीसुं । गिरिकुहरकंदरासु य विजणेषु य रुक्खहेट्ठेसुं ॥ ७ ॥ धीधणियबद्धकच्छा भीया
 जरमरणजम्मणसयाणं । सेलसिलासयणत्था साहंति उ उत्तमट्ठाइं ॥ ८ ॥ दीवोदहिरण्णेषु य खयरावहियासु पुणरविय तासु । कमलसिरीमहिलादिसु भत्तपरिन्ना कया थीसु ॥ ९ ॥ जइ
 ताव सावयाकुलगिरिकंदरविसमकडगदुग्गासुं । साहंति उत्तमट्ठं धिइधणियसहायगा धीरा ॥ ५५० ॥ किं पुण अणगारसहायगेण अण्णुन्नसंगहबलेणं । परलोए य न सक्का साहेउं अप्पणो
 अट्ठं ? ॥ १ ॥ समुइन्नेसु य सुविहिय ! उवसग्गमहब्भएसु विविहेसु । हियएण चिंतणिज्जं रयणनिही एस उवसग्गो ॥ २ ॥ किं जायं जइ मरणं अहं च एगाणिओ इहं पाणी । वसिओ-
 ऽहं तिरियत्ते बहुसो एगाणिओ रण्णे ॥ ३ ॥ वसिऊणऽवि जणमज्झे वच्चइ एगाणिओ इमो जीवो । मुत्तूण सरीरघरं मच्चुमुहा कडिठओ संतो ॥ ४ ॥ जह बीहंति य जीवा विविहाण वि-
 हासियाण एगाणी । तह संसारगएहिं जीवेहिवि हेसिया अन्ने ॥ ५ ॥ सावयभयाभिभूओ बहूसु अडवीसु निरभिरामासु । सुरहिहरिणमहिससूयरकरवोडियरुक्खलायासु ॥ ६ ॥ गयगव-
 यखग्गगंडयवग्घतरच्छच्छभल्लचरियासु । भल्लुंकिकंकदीवियसंचरसब्भावकिण्णासुं ॥ ७ ॥ मत्तगइंदनिवाडियभिल्लपुलिंदाविकुंडियवणासुं । वसिओऽहं तिरियत्ते भीसणसंसारचारम्मि
 ॥ ८ ॥ कत्थ य मुद्धमिगत्ते बहुसो अडवीसु पयइविसमासु । वग्घमुहावडिएणं रसियं अइभीयहियएणं ॥ ९ ॥ कत्थइ अइदुण्णिक्खो भीसणविगरालघोरवयणोऽहं । आसि महंविय वग्घो
 रुरुमहिसवराहविहवओ ॥ ५६० ॥ कत्थइ दुब्बिहिएहिं रक्खसवेयालभूयरूवेहिं । छलिओ वहिओ य अहं मणुस्सजम्मम्मि निस्सारो ॥ १ ॥ पयइकुडिलम्मि कत्थइ संसारे पाविऊण
 भूयत्तं । बहुसो उब्बियमाणो मएवि बीहाविया सत्ता ॥ २ ॥ विरसं आरसमाणो कत्थइ रण्णेषु घाइओ अहयं । सावयगहणम्मि वणे भयभीरू खुभियचित्तोऽहं ॥ ३ ॥ पत्तं विचित्तविरसं
 दुक्खं संसारसागरगएणं । रसियं च असरणेणं कयंतदंतंतरगएणं ॥ ४ ॥ तइया कीस न हायइ जीवो जइया सुसाणपरिविद्धं । भल्लुंकिकंकवायससएसु ढोकिज्जए देहं ॥ ५ ॥ ता तं निज्जि-
 णिऊणं देहं मुत्तूण वच्चए जीवो । सो जीवो अविणासी भणिओ तेलुकदंसीहिं ॥ ६ ॥ तं जइ ताव न मुच्चइ जीवो मरणस्स उब्बियंतोऽवि । तम्हा मज्झ न जुज्जइ दाऊण भयस्स अप्पाणं
 ॥ ७ ॥ एवमणुचित्तयंता सुविहिय ! जरमरणभावियमईया । पावंति कयपयत्ता मरणसमाहिं महाभागा ॥ ८ ॥ एवं भावियचित्तो संथारवरंमि सुविहिय ! सयावि । भावेहि भावणाओ
 बारस जिणवयणदिट्ठाओ ॥ ९ ॥ इह इत्तो चउरंगे चउत्थमग्गं (मंगं) सुसाहुधम्मम्मि । वच्चेइ भावणाओ बारसिमो बारसंगविऊ ॥ ५७० ॥ समणेण सावएण य जाओ निच्चंपि भावणि-
 ज्जाओ । दढसंवेगकरीओ विसेसओ उत्तमट्ठम्मि ॥ १ ॥ पढमं अणिच्चभावं असरणं एगयं च अन्नत्तं । संसारमसुभयाविय विविहं लोगस्सहावं च ॥ २ ॥ कम्मस्स आसवं संवरं च निज्ज-
 रणमुत्तमे य गुणे । जिणसासणम्मि बोहिं च दुल्लहं चित्तए मइमं ॥ ३ ॥ सब्बट्ठाणाइं असासयाइं इह चेव देवलोगे य । सुरअसुरनराइं रिद्धिविसेसा सुहाइं वा ॥ ४ ॥ मायापिडिहिं सहव-
 डिहिएहिं मित्तेहिं पुत्तदारेहिं । एगयओ सहवासो पीई पणओऽविय अणिच्चो ॥ ५ ॥ भवणेहिं व वणेहि य सयणासणजाणवाहणाइंहिं । संजोगोऽवि अणिच्चो तह परल्लोगेहिं सह तेहिं ॥ ६ ॥
 बलवीरियरूवजोव्वणसामग्गीसुभगया वपूसोभा । देहस्स य आरुग्गं असासयं जीवियं चेव ॥ ७ ॥ जम्मजरामरणभए अ(हऽ)भिदूदुए विविहवाहिसंतत्ते । लोगम्मि नत्थि सरणं जिणिंदवर-
 सासणं मुत्तुं ॥ ८ ॥ आसेहि य हत्थीहि य पव्वयमित्तेहिं निच्चमित्तेहिं । सावरणपहरणेहि य बलवयमित्तेहिं जोहेहिं ॥ ९ ॥ महया भडचडगरपहकरेण अवि चक्कवट्ठिणा मच्चू । न य जियपुव्वो
 केणई नीइबलेणावि लोगंमि ॥ ५८० ॥ विविहेहि मंगलेहि य विज्जामंतोसहीपओगेहिं । नवि सक्का तारे(ए)उं मरणा णवि रुण्णसोएहिं ॥ १ ॥ पुत्ता मित्ता य पिया सयणो बंधवजणो य

१४६ मरणसमाधिप्रकीर्णकं ७१९१-५३१-५८२

मुनि दीपरत्नसागर

अत्था य । न समत्था ताएउं मरणा सिंदावि देवगणा ॥ २ ॥ सयणस्स य मज्झगओ रोगाभिहओ किलिस्सइ इहेगो । सयणोऽविय से रोगं न विरिंचइ नेव नासेइ ॥ ३ ॥ मज्झम्मि बंध-
 वाणं इक्को मरइ कलुण रुयंताणं । न य णं अत्तेति तओ बंधुजणो नेव दाराइ ॥ ४ ॥ इक्को करेइ कम्मं फलमवि तस्सेक्कोओ समणुहवइ । इक्को जायइ मरइ य परलोयं इक्को जाई ॥ ५ ॥
 पत्तेयं पत्तेयं नियगं कम्मफलमणुहवंताणं । को कस्स जए सयणो ? को कस्स व परजणो भणिओ ? ॥ ६ ॥ को केण समं जायइ ? को केण समं च परभवं जाई ? । को वा करेइ किंची ?
 कस्स व को कं नियत्तेइ ? ॥ ७ ॥ अणुसोअइ अण्णजणं अन्नभवंतरगयं तु बालजणो । नवि सोयइ अप्पाणं किलिस्समाणं भवसमुहे ॥ ८ ॥ अन्नं इमं सरीरं अन्नोऽहं बंधवावि मे अन्ने ।
 एवं नाऊण खमं कुसलस्स न तं खमं काउं ? ॥ ९ ॥ हा ! जह मोहियमइणा सग्गइमग्गं अजाणमाणेणं । भीमे भवकंतारे सुचिरं भमियं भयकरम्मि ॥ ५९० ॥ जोणिसयसहस्सेसु य
 असइं जायं मयं वऽणेगासु । संजोगविप्पओगा पत्ता दुक्खाणि य बहूणि ॥ १ ॥ सग्गेसु य नरगेसु य माणुस्से तह तिरिक्खजोणीसुं । जायं मयं च बहुसो संसारे संसरंतेणं ॥ २ ॥ निब्भ-
 त्थणावमाणणवहबंधणरुंधणा धणविणासो । नेगा य रोगसोगा पत्ता जाईसहस्सेसुं ॥ ३ ॥ सो नत्थि इहोगासो लोए वालग्गकोडिमित्तोऽवि । जम्मणमरणाबाहा अणेगसो जत्थ न य
 पत्ता ॥ ४ ॥ सव्वाणि सबलोए रूवी दव्वाणि पत्तपुव्वाणि । देहोवक्खरपरिभोगयाइ दुक्खेसु य बहुसुं ॥ ५ ॥ संबंधिबंधवत्ते सबे जीवा अणेगसो मज्झं । विविहवहवेरजणया दासा सामी
 य मे आसी ॥ ६ ॥ लोगसहावो धी धी जत्थ व माया मया हवइ धूया । पुत्तोऽविय होइ पिया पियावि पुत्तत्तणमुवेइ ॥ ७ ॥ जत्थ पियपुत्तगस्सवि माया छाया भवंतरगयस्स । तुट्ठा
 खायइ मंसं इत्तो किं कट्टयरमन्नं ? ॥ ८ ॥ धी संसारो जहियं जुवाणओ परमरूवगवियओ । मरिऊण जायइ किमी तत्थेव कलेवे नियए ॥ ९ ॥ बहुसो अणुभूयाइं अईयकालम्मि
 सब्बदुक्खाइं । पाविहिइ पुणो दुक्खं न करेहिइ जो जणो धम्मं ॥ ६०० ॥ धम्मेण विणा जिणदेसिएण नन्नत्थ अत्थि किंचि सुहं । ठाणं वा कज्जं वा सदेवमणुयासुरे लोए ॥ १ ॥ अत्थं
 धम्मं कामं जाणिय कज्जाणि तिन्नि मिच्छत्ति(न्ति) । जं तत्थ धम्मकज्जं तं सुभमियराणि असुभाणि ॥ २ ॥ आयासकिलेसाणं वेराणं आगरो भयकरो य । बहुदुक्खदुग्गइकरो अत्थो मूलं
 अणत्थाणं ॥ ३ ॥ किच्छाहिं पाविउं जे पत्ता बहुभयकिलेसदोसकरा । तक्खणसुहा बहुदुहा संसारविवद्वणा कामा ॥ ४ ॥ नत्थि इहं संसारे ठाणं किंचिवि निरुवद्दुयं नाम । ससुरासुरेसु
 मणुए नरएसु तिरिक्खजोणीसुं ॥ ५ ॥ बहुदुक्खपीलियाणं मइमूढाणं अणप्पवसगाणं । तिरियाणं नत्थि सुहं नेरइयाणं कओ चेव ? ॥ ६ ॥ हयगब्भवासजम्मणवाहिजरामरणरोगसोगेहिं ।
 अभिभूए माणुस्से बहुदोसेहिं न सुहमत्थि ॥ ७ ॥ मंसट्टियसंघाए मुत्तपुरीसभरिए नवच्छिइडे । असुइं परिस्सवंते सुहं सरीरम्मि किं अत्थि ? ॥ ८ ॥ इट्ठजणविप्पओगो चवणभयं चेव
 देवलोगाओ । एयारिसाणि सग्गे देवावि दुहाणि पाविंति ॥ ९ ॥ ईसाविसायमयकोहलोहदोसेहिं एवमाईहिं । देवावि समभिभूया तेसुवि य कओ सुहं अत्थि ? ॥ ६१० ॥ एरिसयदोसपुण्णे
 खुत्तो संसारसायरे जीवो । जं अइचिरं किलिस्सइ तं आसवहेउयं सब्बं ॥ १ ॥ रागदोसपमत्तो इंदियवसओ करेइ कम्माइं । आसवदारेहिं अविगुणेहिं तिविहेण करणेणं ॥ २ ॥ धी धी मोहो
 जेणिह हियकामो खलु स पावमायरइ । न हु पावं हवइ हियं विसं जहा जीवियत्थिस्स ॥ ३ ॥ रागस्स य दोसस्स य धिरत्थु जं नाम सदहंतोऽवि । पावेसु कुणइ भावं आउरविज्जव
 अहिएसु ॥ ४ ॥ लोभेण अहव घत्थो कज्जं न गणेइ आयअहियाइं । अइलोहेण विणस्सइ मच्छुव्व जहा गलं गिलिओ ॥ ५ ॥ अत्थं धम्मं कामं तिण्णिवि बुद्धो जणो परिचयइ । ताइं करेइ
 जेहि उ (न) किलिस्सइ इह परभवे य ॥ ६ ॥ हुंति अजुत्तस्स विणासगाणि पंचिंदियाणि पुरिसस्स । उरगा इव उग्गविसा गहिया मंतोसहीहिं विणा ॥ ७ ॥ आसवदारेहिं सया हिंसाइ-
 एहिं कम्ममासवइ । जह नावाइ विणासो छिदेहिं जलं उयहिमज्झे ॥ ८ ॥ कम्मासवदाराइं निरुंभियवाइं इंदियाइं च । हंतव्वा य कसाया तिविहंतिविहेण मुक्खत्थं ॥ ९ ॥ निग्गहियक-
 साएहिं आसवा मूलओ हया हुंति । अहियाहारे मुक्के रोगा इव आउरजणस्स ॥ ६२० ॥ नाणेण य झाणेण य तवोबलेण य बला निरुंभंति । इंदियविसयकसाया धरिया तुरगा व रज्जुहिं
 ॥ १ ॥ हुंति गुणकारगाइं सुयरज्जुहिं धणियं नियमियाइं । नियगाणि इंदियाइं जइणो तुरगा इव सुदंता ॥ २ ॥ मणवयणकायजोगा जे भणिया करणसणिया तिण्णि । ते जुत्तस्स गुणकरा
 हुंति अजुत्तस्स दोसकरा ॥ ३ ॥ जो सम्मं भूयाइं पासइ भूए अ अप्पभूए य । कम्ममलेण न लिप्पइ सो संवरियासवदुवारो ॥ ४ ॥ धण्णा सत्तहियाइं सुणंति धण्णा करंति सुणियाइं ।
 धण्णा सग्गइमग्गं मरंति धण्णा गया सिद्धि ॥ ५ ॥ धण्णा कलत्तनियलेहिं विप्पमुक्को सुसत्तसंजुत्ता । वारीओव गयवरा घरवारीओवि निप्फिडिया ॥ ६ ॥ धण्णा (उ) करंति तवं संजम
 जोगेहिं कम्ममट्ठविहं । तवसलिलेणं मुणिणो धुणंति पोरणयं कम्मं ॥ ७ ॥ नाणमयवायसहिओ सीलुज्जलिओ तवो मओ अग्गी । संसारकरणबीयं दहइ दवग्गीव तणरासिं ॥ ८ ॥
 इणमो सुगइगइपहो सुदेसिओ उक्खिओ य जिणवरेहिं । ते धन्ना जे एयं पहमणवज्जं पवज्जंति ॥ ९ ॥ जाहे य पावियव्वं इह परलोए य होइ कल्लाणं । ता एयं जिणकहियं पडिवज्जइ
 भावओ धम्मं ॥ ६३० ॥ जह जह दोसोवरमो जह जह विसएसु होइ वेरग्गं । तह तह विजाणयाहि आसन्नं से पयं परमं ॥ १ ॥ दुग्गो भवकंतारे भममाणेहिं सुचिरं पणट्ठेहिं । दिट्ठो जिणो-
 ९४७ मरणसमाधिप्रकीर्णकं, ११८१-५८२ - ६३२

वदिटो सगइमगो कहवि लद्धो ॥ २ ॥ माणुस्सदेसकुलकालजाइइंदियबलोवयाणं च । विभाणं सद्धा दंसणं च दुलहं सुसाहणं ॥ ३ ॥ पत्तेसुवि एएसुं मोहस्सुदएण दुल्लहो सुपहो । कुपह-
 बहुयत्तणेण य विसयसुहाणं च लोमेणं ॥ ४ ॥ सो य पहो उवलद्धो जस्स जए बाहिरो जणो बहुओ । संपत्तिच्चिय न चिरं तम्हा न खमो पमाओ भे ॥ ५ ॥ जह जह दढप्पइण्णो समणो
 वेरगभावणं कुणइ । तह तह असुमं आयवहयं व सीयं खयमुवेइ ॥ ६ ॥ एगअहोरत्तेणवि दढपरिणामो अणुत्तरं जंति । कंडरिओ पुंडरिओ अहरगईउड्ढगमणेसु ॥ ७ ॥ बारसवि भाव-
 णाओ एवं संखेवओ समत्ताओ । भावेमाणो जीवो जाओ समुवेइ वेरगं ॥ ८ ॥ भाविज्ज भावणाओ पालिज्ज वयाइं रयणसरिया(सा)इं । पडिपुण्णपावखवणे अइरा सिद्धिपि पाविहिसि ॥ ९ ॥
 कथइ सुहं सुरसमं कथइ निरओवमं हवइ दुक्खं । कथइ तिरियसरित्थं माणुसजाइं बहुविचित्ता ॥ ६४० ॥ दट्ठणवि अप्पसुहं माणुस्सं णेगदोस(सोग)संजुत्तं । सुट्ठुवि हियमुवइट्ठं
 कज्जं न मुणेइ मूढजणो ॥ १ ॥ जह नाम पट्ठणगआ संते मुल्लंमि मूढभावेणं । न ल्हंति नरा लाहं माणुसभावं तहा पत्ता ॥ २ ॥ संपत्ते बलविरिए सन्भावपरिक्खणं अजाणंता । न ल्हंति
 नरा बोहिं दुग्गइमगं च पावंति ॥ ३ ॥ अम्मापियरो भाया भज्जा पुत्ता सरीर अत्थो य । भवसागरंमि घोरे न हुंति ताणं च सरणं च ॥ ४ ॥ नवि माया नवि य पिया न पुत्तदारा न चेव
 बंधुजणो । नविय धणं नवि धम्मं दुक्खमुइमं उवसमेंति ॥ ५ ॥ जइया सयणिज्जगओ दुक्खत्तो सयणबंधुपरिहीणो । उवत्तइ परियत्तइ उरगो जह अग्गिमज्झंमि ॥ ६ ॥ अगुइ सरीरं
 रोगा जम्मणसयसाहणं छुहा तण्हा । उण्हं सीयं वाओ पहाभिघाया यण्णेगविहा ॥ ७ ॥ सोगजरामरणाइं परिस्समो दीणया य दारिहं । तहय पियविप्पओगा अप्पियजणसंपओगा य
 ॥ ८ ॥ एयाणि य अण्णाणि अ माणुस्से बहुविहाणि दुक्खाणि । पच्चक्खं पेक्खंतो को न मरइ तं विचित्तं ? ॥ ९ ॥ लद्धणवि माणुस्सं सुदुल्लहं केइ कम्मदोसेणं । सायासुहमणुरत्ता
 मरणसमुदेऽवगाहंति ॥ ६५० ॥ तेण उ इहलोगसुहं मोत्तूणं मा(झा)णसंसियमईओ । विरतिक्खमरणऽभीरू लोगसुईकरणदोगुंछी ॥ १ ॥ दारिदुक्खवेयणबहुविहसीउण्हखुप्पिवासाणं । अर-
 ईभयसोगसामियतकरदुब्भक्खमरणाइं ॥ २ ॥ एएसिं तु दुहाणं जं पडिवक्खं सुहंति तं लोए । जं पुण अच्चंतसुहं तस्स परूक्खा सया लोया ॥ ३ ॥ जस्स न छुहा ण तण्हा न य सीउण्हं
 न दुक्खमुकिट्ठं । न य असुइयं सरीरं तस्सऽसणाईसु किं कज्जं ? ॥ ४ ॥ जह निंबदुमुप्पन्नो कीडो कडुयंपि मन्नए महुरं । तह मुक्खसुहपरूक्खा संसारदुहं सुहं बिंति ॥ ५ ॥ जे कडुय-
 दुमुप्पन्ना कीडा वरकप्पपायवपरूक्खा । तेसिं विसालवल्ली विसं व सग्गो य मुक्खो य ॥ ६ ॥ तह परतित्थियकीडा विसयविसंकुरविमूढदिट्ठीया । जिणसासणकप्पतरुवरपारूक्खरसा
 किलिस्संति ॥ ७ ॥ तम्हा सुक्खमहातरूसासयसिवफलयसुक्खसत्तेणं । मोत्तूण लोगसण्णं पंडियमरणेण मरियव्वं ॥ ८ ॥ जिणमयभाविअचित्तो लोगसुईमलविरेयणं काउं । धम्मंमि तओ
 झाणे सुक्के य मई निवेसेह ॥ ९ ॥ सुणह-जह जिणवयणामय(रस) भावियहियएण झाणवावारो । करणिज्जो समणेणं जं झाणं जेसु झायव्वं ॥ ६६० ॥ इति संले(आरा)हणासुयं ॥ एयं
 मरणविभत्तिं मरणविसोहिं च नाम गुणरयणं । मरणसमाही तइयं संलेहणसुयं चउत्थं च ॥ १ ॥ पंचम भत्तपरिण्णा छट्ठं आउरपच्चखाणं च । सत्तम महपच्चखाणं अट्ठम आराहणपइण्णो ॥ २ ॥
 इमाउ अट्ठ सुयाओ भावे गहियंमि लेस अत्थाओ । मरणविभत्ती रइयं बिय नाम मरणसमाहिं च ॥ ६६३ ॥ सू० २०, १८९८ गाथाः ॥ सिरिमरणविभत्तिपइण्णयं १० ॥ श्रीप्रकीर्णकदशकं श्री-
 सिद्धाद्रितलहट्टिकागतशिलोत्कीर्णसकलागमोपेतश्रीवर्धमानजैनागममंदिरे शिलायामुत्कीर्णं शोधितं च तपोगच्छीयाचार्यानन्दसागरेण ॥ वीरस्य २४६८ गतेष्वन्देपु भाद्रशुक्लचतुर्दश्याम् ॥

५४८ मरणसमाधिप्रकीर्णक, ~~मरणसमाधि~~ ॥ ५४८-५५३

मुनि दीपरत्तसागर